इतिहास का पद्यों में रूपांतरण
भाग-3

रघुवंश मिश्रा

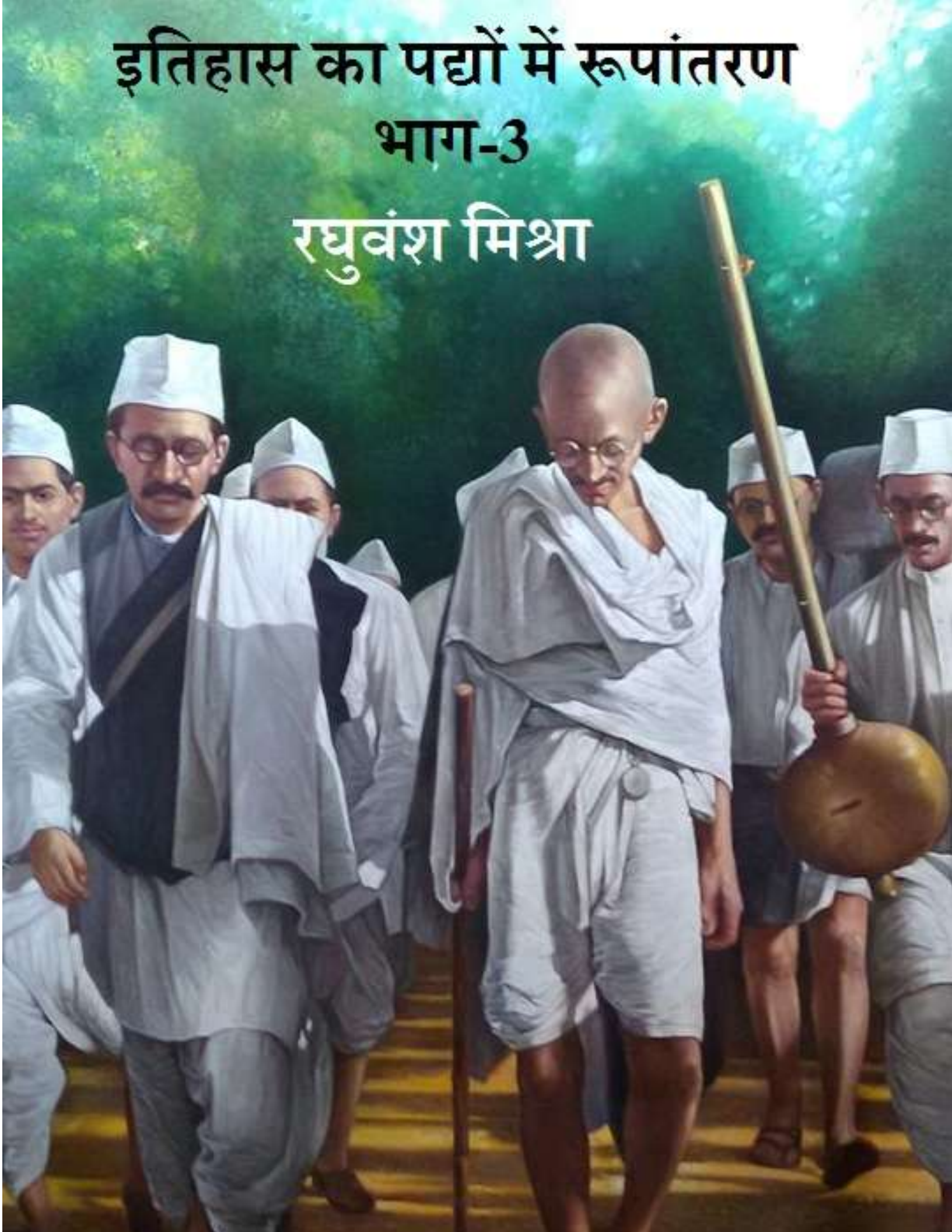

अनुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठ संख्या
भूमिका	3
आधुनिक यूरोप का उदय	5
भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी शासन की स्थापना	29
अंग्रेज़ी शासन का भारतीय जनजीवन पर प्रभाव	60
भारत का प्रथम स्वंतंत्रता संग्राम	72
भारतीय समयज में नये विचार	83
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	98
भारतीय गणतंत्र की स्थापना	149

C - कपीरराइट - रघुवंश मिश्रा

प्रकाशक – आलोक प्रकाशन

भूमिका

सपने कौन देखता है? वह जिनके सपने अधूरे रह जाते हैं या फिर वह जिनके पूरे हो जाते हैं। अधूरापन पूर्णता की ओर ले जाता हैं जबकि पूर्णता शून्यता की ओर। इसका तात्यपर्य यह है कि सपने वही देखते है जिनके सपने अधूरे होते है, जिन्होने अपना स्वप्न पूर्ण मान लिया वह शून्य में समाहित हो जाता है। आज हम विकास के जिस स्तर पर खड़े हैं और आगे भी जिस स्तर पर पहुचेंगे या जाने का प्रयास करेंगें वह हमारे अधूरेपन का प्रतिफल है और विकास के जिस क्षेत्र में हम अपने स्वप्न पूर्ण मान लिए वहां शून्य में समावेशन की प्रक्रिया जारी है।

प्राचीन काल में मानव ने आदिम अवस्था में जंगलो के कष्ट दायक जीवन से मुक्ति का जो अधूरा स्वप्न देखा था उसी का परिणाम हैं कि आज हम इस जगह पर पहुंचे हुए हैं। पता नही सफर किसी मोड़ पर यदि स्वप्न पूरे हो गए होते तो शून्य के भीतर कहां पर स्थित होते।

दोस्तो इस प्रकार हमारा इतिहास भी अधूरे सपनो की एक दास्तान हैं हर समय व परिस्थिति में हमने सपने देखे ,किन्तु यह भी ध्यान रखा कि सपनो की चैन/कड़ी बनी रहे अर्थात एक स्वप्न से दूसरे स्वप्न की उत्पत्ती होती रहे और हम सतत् विकास करते रहे।

जंगल में रहने वाले मानव ने अपने समय व परिस्थिति के मुताबिक स्वप्न देखें, तो विदेशियो के अतातायी व क्रूर शासक में सांस लेने वाले लोगो नें अपने समय व परिस्थितियो के मुताबिक फर्क केवल समय और परिस्थितियो का रहा हैं सपने तब भी अधूरे है। इस अधूरेपन के कारण ही हम निरंतर गतिशील बने हुए है।

उपर जो भी कुछ कहा गया है उसका अभिप्राय है कि अधूरापन शाप नही एक वरदान हैं। बहुत से शिक्षक पढ़ाते समय अपना उद्देश्य पूरा नही कर पाने की स्थिति में निराश होकर अपने उद्देश्य को ही छोड़ देते है जो सर्वथा अनुचित है। प्रयास करने के उपरान्त उद्देश्य पूर्ण नही होने की स्थिति में एक दूसरा अधूरा स्वप्न जन्म लेता हैं और फिर वही आपको आगे की बढ़ने की प्रेरणा देगी।

अब तक हमने इतिहास के जिन तीन काल खण्डो का अध्ययन किया हैं वह सभी इसी स्वप्न रुपी भंवर में डूबना और उससे बचना सिखाया है। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि आप इतिहास का अध्ययापन उल्लासपूर्ण वातावरण में करावें और बच्चो में भी यह भावना जागृत करें कि इतिहास एक निरस व उबाउ विषय नही, बल्कि नीरसता और उबाउपन रुपी महासागर को पार करने का सबसे सुगम व आरामदायक नौका है।

रघुवंश मिश्रा
उ0व0ग0 शिक्षक टेंगनमाड़ा

आधुनिक यूरोप का उदय

इतिहास से जानते हैं,

मानव क्रियाकलापों का हाल।

समझ व अध्ययन के लिये,

इसके हैं तीन काल।।

पिछली दो कक्षाओं में,

जिस समय का जाना हाल।

उसमें सम्मिलित था,

प्राचीन व मध्यकाल।।

नवीन प्रवृत्तियां थी,

इस विभाजन का आधार।

प्रत्येक काल में प्रकट हुआ,

जन साधारण का सरोकार।।

आधुनिक काल का अर्थ है,

नवीन प्रवृत्ति व विचार धारायें।

प्राचीन व मध्यकाल से

भिन्न दिखा मानव क्रियाएं।।

जो नवीन प्रवृत्ति आई,

प्राचीन व मध्यकाल के बाद।

उसमे सर्व प्रमुख था,

तर्क,बुद्धि व मानववाद।।

तर्क की कसौटी पर,

तथ्यों को किया स्वीकार।

अप्रमाणित बातों को,

मानने से किया इंकार।।

तर्क एवं बुध्दिवाद ने,

बढ़ाई अन्वेशण की भूख।

मानववाद का केन्द्र बना,

मानव की भौतिक सुख।।

भिन्न महाद्वीप व देशों की,

रही यह विशेश बात।

अलग-अलग समय में,

परिवर्तन की हुई शुरूआत।।

15 वीं, 16 सदी है,

यूरोप में इस काल का समय।

18 वीं सदी से हुआ,

भारत में आधुनिक काल का उदय।।

15 वीं से 18 वीं सदी के बीच,

विश्व हुआ नये विचारों से ओत-प्रोत।

जिन साधनों से जानकारी हुई,

उसे कहते हैं इतिहास के स्त्रोत।।

आधुनिक काल के संबंध में,

जिन स्त्रोतों से मिलता है ज्ञान।

ऐसे स्त्रोत बहुत से हैं,

जिन्हें प्राप्त करना है आसान।।

दस्तावेजों में सुरक्षित है,

सरकारी कामकाज।

इस काल की पुस्तकें,

आसानी से उपलब्ध है आज।।

पुस्तकों के मुद्रित,

होने के कारण।

उपन्यास, जीवनी, यात्रा वृतांत बना,

इतिहास जानने के साधन।।

ऐसे व्यक्ति जिन्होंने देखी,

स्वतंत्रता संघर्श की घटना सारी।

उनसे भी प्राप्त होती है,

आधुनिक इतिहास की जानकारी।।

पन्द्रहवीं सदी तक यूरोप में,

सामंत व धर्म गुरू रहे प्रबल।

जिनकी तुलना में,

राजसत्ता रही निर्बल।।

जनता के शोशण में,

सामंत व धर्म गुरू रहे मस्त।

भयानक दमन से,

जन साधारण हुये त्रस्त।।

ईसाईयों के धर्म गुरू पोप,

था ईश्वर का प्रतिनिधि।

ईश्वर और परलोक की,

निश्चित करता था विधि।।

ईश्वर व परलोक की अपेक्षा,

सोच का केन्द्र बना वर्तमान।

जीवन के दुख दर्द पर,

ज्यादा दिया जाने लगा ध्यान।।

परम्पराओं का तर्क के आधार पर,

प्रबुद्ध विचारकों ने की समीक्षा।

अपनी खुली आंखों से,

विश्व को देखने की दी शिक्षा।।

परम्पराओं को परखने का,

जो राह बतलाया।

तर्क पर आधारित यह सोच,

बुध्दिनिष्ठा कहलाया।।

तर्क से परखा गया,

परम्परायें थी जो प्रचलित।

स्वयं यह जाना गया,

क्या है उचित और अनुचित।।

बुध्दिनिष्ठा से अब,

जन साधारण ने जाना।

जो बुध्दि को हो स्वीकार,

उसे ही माना।।

पन्द्रहवीं शताब्दी में आरंभ,

बुध्दिनिष्ठा के कारण।

यूरोप में हुआ,

वैचारिक क्रांति अर्थात पुनर्जागरण।।

पन्द्रहवीं शताब्दी के,

इस वैचारिक क्रांति के बाद।

पुराने ग्रंथों का हुआ,

स्थानीय भाशाओं में अनुवाद।।

प्राचीन ज्ञान व नवीन विचारों से,

ज्ञान का हुआ तेजी से प्रसार।

पुर्नजागरण को फेलाने में,

कारक बना छपाई मशीन का अविश्कार।

नये दृष्टिकोण ने,

ज्ञान का किया उत्थान।

जिससे प्रभावित हुआ,

साहित्य, चित्र, शिल्प व विज्ञान।।

पुर्नजागरण से,

लोगों को यह मिली प्रेरणा।

कला में देवी-देवताओं के बदले,

महत्तव पाया मानव की भावना।।

ब्रह्मांड के संबंध में

जिन सिद्धांतों का होता था पालन।

कोपरनिकस, गैलेलियों ने खंडनकर

किया नये सिध्दांतों का प्रतिपादन।।

सूर्य नहीं पृथ्वी घूमती है,

कथन था पुराने सिध्दांतों पर आघात।

धर्म आधारित विचार बदलने से,

धर्म सुधार आंदोलन का हुआ सूत्रपात

लोगों की अज्ञानता का लाभ उठा,

ईसाई धर्म गुरू करते थे शोशण।

जिससे धर्म संस्थाओं में हुआ,

भ्रष्टाचार का पोषण।।

लैटिन भाषा में लिखा गया था,

ईसाई धर्म ग्रंथ बाईबिल।

लैटिन भाषा समझने के,

सामान्य लोग नहीं थे काबिल।।

मध्यकालीन यूरोपीय समाज पर,

रोमन कैथोलिक चर्च का जोर रहा।

शोषण व भ्रष्टाचार के विरूध्द आंदोलन को,

लोगों ने धर्म सुधार आंदोलन कहा।।

शोषण व भ्रष्टाचार था,

धर्म संस्थाओं में व्याप्त।

उन दिनों के विचारकों ने की

आवाज बुलंद करने इसे समाप्त।।

धर्म सुधार आंदोलन,

जिसने किया शुरू।

मार्टिन लूथर नाम था,

एक जर्मन धर्म गुरू।।

उन्होंने लोगों से कहा,

आप स्वयं बाईबिल पढ़ो।

धर्म गुरू के कथन पर,

आंख बंद कर आगे मत बढ़ो।।

मार्टिन लूथर ने दूर करना चाहा,

धर्म व्यवस्था में प्रचलित दोष।

पोप सत्ता को चुनौती देकर

जन साधारण में भर दिया जोश।।

धर्म सुधार के फलस्वरूप,

पोप के दबदबे में कमी आई।

पोप सत्ता का विरोध कर,

प्रोटेस्टेट कहलाये अनुयायी।।

यूरोप के कुछ शासक,

जो थे पोप वर्चस्व से परेशान।

मार्टिन लूथर का साथ दे,

धर्म सुधार आंदोलन को दिया सम्मान ।।

धर्म सुधार आंदोलन को,

समर्थन दिया जिसने स्वयं।

इंग्लैण्ड का वह राजा,

नाम था हेनरी अष्टम।।

धर्म सुधार आंदोलन से,

यूरोप में आया युग ‘‘नव’’।

आधुनिक विचारों का सूत्रपात कर,

पुनर्जागरण को बनाया संभव।।

सोलहवीं सदी के यूरोप में,

जब सामन्तों की सत्ता हुई दुर्बल।

राजा के हाथ में सत्ता आने से,

राजसत्ता होने लगा प्रबल।।

इस कारण यूरोप में,

राष्ट्रीय राजतंत्रों का हुआ उदय।

समान हित संबंध वालों की,

राष्ट्रीय भावना ने इसे किया तय।।

राजसत्ता के प्रबल होने से,

इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन में आई राष्ट्रीय एकता।

राष्ट्रीय राजतंत्रों का उदय है,

आधुनिक युग की महत्वपूर्ण विशेषता।

नवजागरण के साथ ही,

आरंभ हुआ महान खोज यात्रा।

जिससे बढ़ा एशिया के साथ,

यूरोप के व्यापार की मात्रा।।

भारत और यूरोपीय देशों के,

व्यापारिक संबंध थे पुराने।

जल और थल दोनों मार्ग,

व्यापारियों के थे जाने पहचाने।।

यूरोपीय देशों के व्यापार में,

वेनिस और जिनेवा का रहा महत्व।

व्यापार पर अधिकार जमाये रखने,

इटली ने स्थापित किया अपना प्रभुत्व।।

कुस्तुनतुनियां था यूरोप एवं भारत के,

व्यापारिक मार्ग का मुख्य व्दार।

1453 ई. में इस पर,

तुर्कों ने कर लिया अधिकार।।

कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों ने

अधिकार कर लिया जब।

यूरोपीय देशों तक समान पहुंचाये,

अन्य देशों के व्यापारी अब।।

1453 में कुस्तुनतुनिया में

जब हुआ तुर्कों का अधिकार।

यूरोपीय देशों का बंद हो गया,

भारत से सीधा व्यापार।।

एशियाई देशों की वस्तु,

यूरोपीय अरब व्यापारियों से लेते।

आवश्यक वस्तु के लिये,

माल पर भारी चुंगी देते।।

यूरोपीय व्यापारियों को अरबों का,

व्यापारिक अत्याचार सहना पड़ता था।

अरब व्यापारियों को हराने,

आरंभ की व्यापारिक मार्गों की खोज।।

समुद्री यात्रायें सुगम हुई,

जब हुआ कुतुबनामा का ज्ञान।

महत्वाकांक्षी शासकों ने भी,

इस कार्य में किया सहयोग प्रदान।।

भारत की खोज में अविस्मरणीय है,

पुर्तगाली नाविक का कारनामा।

केप आफ गुड होप से भारत पहुंचा,

20 मई 1498 को वास्कोडिगामा।

केप आफ गुड होप का आरंभ है,

अफ्रीका के दक्षिणी छोर।

इससे होकर आगे बढ़ा,

वास्कोडिगामा पश्चिमी समुद्र तट की ओर।।

भारत की खोज में निकले,

नाविकों को मिला खूब यश।

अमेरिकी समुद्री मार्ग खोजा,

ईटली के कोलम्बस।।

केप आफ गुड होप ही,

उतमाशा अंतरीप भी कहलाया।

यही वह स्थान है,

जहां से वास्कोडिगामा भारत आया।।

नये भू-भागों की खोज से,

आने लगे यूरोपीय व्यापारी।

यहां के व्यापार से,

उन्हें होने लगा लाभ भारी।।

सोलहवीं शताब्दी तक,

अन्य यूरोपीय देश स्पर्धा में उतर पड़े।

अपनी-अपनी शक्ति बढ़ाकर,

आपस में एक दूसरे से युध्द लड़े।।

व्यापार में वृध्दि करना नीति बना,

सत्रहवीं शताब्दी के बाद।

अपने व्यापारियों को छूट देना,

कहलाया व्यापारवाद।।

व्यापारवाद की नीति से,

बढ़ा यूरोपीय देशों का व्यापार।

जिससे व्यापारी वर्ग के पास,

एकत्र होने लगा धन अपार।।

व्यापार से लाभ के साथ,

खतरे भी सामने आई।

कारीगरों को मदद देकर,

व्यापारियों ने कम की कठिनाई।।

कामों को सामूहिक रूप से करने,

व्यापारिक कंपनियों की हुई स्थापना।

खतरों से बचने का इसे,

व्यापारियों ने सरल तरीका माना।।

आरंभ में इंग्लैण्ड में,

व्यापारियों की जो संस्था बनी।

भारत में उसे कहा गया,

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी।।

उद्योगों का महत्व बढ़ना था,

व्यापार वृध्दि का परिणाम।

वस्तु विनिमय की जगह अब,

सिक्कों में हुआ लेने देन का काम।।

सिक्कों में लेन-देन से,

उपलब्ध हुई बैंकों की सुविधा।

व्यापार में पूंजी विनियोजन की,

मन से दूर हुई दुविधा।।

अधिकाधिक पूंजी विनियोजन से,

बढ़ा व्यापारियों का मान।

नवीन उद्योग प्रारंभ हुआ,

जैसे जहाज निर्माण।।

सिक्कों से होने लगा,

लेन देन जब।

नये व्यापारिक केन्द्र बने,

लंदन, ब्रिस्टल अब।।

व्यापार उद्योग में वृध्दि ने,

यूरोपीय देशों में लाया धन।

फलस्वरूप यूरोपीय राष्ट्र हुये,

समृध्द और संपन्न।।

व्यवसाय की वृध्दि से,

नया वर्ग अस्तित्व में आया।

बैंकर, दलाल, लिपिक,

मध्यम वर्ग कहलाया।।

मध्यम वर्ग रूढ़ियों के,

बंधन में नहीं जकड़ा।

नवीन बातों को,

उत्सुकता से पकड़ा।।

वैचारिक उदारता व संपन्नता ने,

स्थिति बनाई सुदृढ़।

मध्यम वर्ग बन गया,

सामाजिक व्यवस्था की रीढ़।।

व्यावसायिक गतिविधि से,

मध्यम वर्ग का बढ़ा आय।

आगे चलकर जुड़ा इसमें,

कारीगर व निर्माता का समुदाय।।

व्यापार वृध्दि का प्रभाव,

राजनैतिक क्षेत्र पर भी पड़ा।

व्यापारी अपने हित के लिये,

राजसत्ता के समर्थन में हुआ खड़ा।।

व्यापारियों से देश को,

होता था धन अर्जन।

संपन्नता का आधार मानकर,

शासकों ने व्यापारियों का किया समर्थन।।

शासक और व्यापारी को,

प्राप्त हुई एक दूसरे की निष्ठा।

देश में व्यापारी वर्ग की,

बढ़ने लगी महत्व और प्रतिष्ठा।।

अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने,

व्यापारियों ने किया हर जतन।

अब यूरोप में आरंभ हुआ,

सामंतवाद का पतन।।

सामंतवाद के पतन से,

एक नई व्यवस्था आया।

उद्योग आधारित व्यवस्था,

पूंजीवाद कहलाया।।

उद्योग और व्यापार में,

पूंजीपतियों का दिखा प्रभाव।

तीसरे वर्ग के रूप में हुआ,

श्रमिक वर्ग का प्रादुर्भाव।।

पूंजीपति होते थे,

कारखानों के मालिक।

वस्तुओं का उत्पादन कर,

लाभ कमाये मन माफिक।।

कच्चे माल व मशीनों पर,

पूंजीपतियों ने लगाये धन।

श्रमिक वर्ग ने किया

वस्तुओं का उत्पादन।।

परिवार की मदद से

काम करता था कारीगर।

वस्तु तैयार करने की,

पहले जगह होता था घर।।

बहुत समय में होता था,

वस्तु का उत्पादन व ढुलाई।

धीमी घरेलू व्यवस्था ने,

बढ़ती मांग पूरा नहीं कर पाई।।

बढ़ने लगी जब,

वस्तुओं की मांग लगातार।

व्यापारी वर्ग ने किया तब,

उत्पादन प्रणाली में सुधार।।

समाज का एक वर्ग,

जिन्होंने खूब धन कमाये।

बड़ी मात्रा में पूंजी लगाकर,

नये नये कारखाने बनाये।।

मशीनों की मदद से कारीगर,

वस्तु करते थे तैयार।

पूंजीपति बेचने इन्हें,

ले जाते थे बाजार।।

श्रमिक कारखानों में अब,

काम किये इस प्रकार।

जिसके बदले मिला उन्हें,

एक निश्चित पगार।।

उत्पादन का आधार बना,

जहां सबसे पहले मशीन।

इंग्लैण्ड वह जगह थी,

जिसने अपनाया व्यवस्था नवीन।।

इंग्लैण्ड ने ही सबसे पहले,

भाप चलित इंजन बनाई।

नये किस्म के करघों से

करने लगे सूतों की कताई।।

इंजन के अविष्कार से,

सरल हुआ आना जाना।

भाप शक्ति से संभव हुआ,

जहाजों को तेज गति से चलाना।।

विकास के नये दौर में,

मशीन से होने लगा काम।

उत्पादन की इस व्यवस्था को,

दिया गया औद्योगिक क्रांति का नाम।।

इससे यूरोपीय देशों की,

प्रभावित हुई उत्पादन प्रणाली।

अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में,

औद्योगिक क्रांति ने प्रभाव डाली।।

उपनिवेशों के लिये यूरोपीय देशों में,

संघर्ष हुआ प्रबल।

अंततः जो गया,

प्रथम विश्वयुध्द में बदल।।

यूरोपीय शक्तियों ने,

उपनिवेश बनाया जहां।

संसाधनों का दोहन करने,

जनता को अशिक्षित रखा वहां।।

अशिक्षित और पिछड़ा रख,

संसाधनों का किये दोहन।

औपनिवेशिक राष्ट्रों का,

किये भरपूर शोषण।।

भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है,

अठारहवीं सदी के बाद।

उसमें सर्व प्रमुख है,

इंग्लैण्ड का उपनिवेशवाद।।

भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी शासन की स्थापना

यूरोप से भारत आने के लिये,

मार्ग खोजने का किया कारनामा।

1498 ई. में भारत आने वाले,

व्ह पुर्तगाली नाविक था वास्कोडिगामा।।

इसके बाद पुर्तगाल से व्यापारी,

करने आये व्यापार।

व्यापार के साथ ईसाई धर्म का

किये प्रचार प्रसार।।

सबसे पहले उन्होंने,

बीजापुर पर प्रभाव बढ़ाया।

कर्नाटक से गोवा अधिकृत कर,

अपनी राजधानी बनाया।।

अप्रत्यक्ष रूप से करने लगे

इस क्षेत्र पर वे शासन।

समुद्री जहाजों से टैक्स वसुले,

समुद्र पर प्रभाव होने के कारण।।

प्रत्येक विदेशी जहाज से

वे टैक्स लेते।

टैक्स नहीं देने वाले,

जहाजों को डूबो देते।।

यूरोप के कई देशों से

आये व्यापार करने वाले।

कम दामों में खरीदे यहां,

नील, कपड़े और मसाले।।

प्रायः उन दिनों यूरोपीय,

होते थे मांसाहारी।

जिससे वहां मसालो की

मांग होती थी भारी।।

मांस वे खाते थे,

पीकर अंगूर की शराब।

मसालों से खाद्य पदार्थ,

नहीं होते थे खराब।।

मसालों के लिये प्रसिध्द था,

भारत, इंडोनेशिया, श्रीलंका और मलाया।

समुद्री मार्ग होने से,

कम लागत में यहां से मसाला पाया।।

भारत में मसालों की कीमत,

यूरोपीय देशों से था आधा।

यूरोपीय देशों में थी,

मसाला की खपत ज्यादा।।

मसालों की खपत से,

मुनाफे की बढ़ी चाहत।

यहां से मसाले ले गये,

देकर कम से कम लागत।।

मसालों के बदले वे देते थे,

चांदी और सोना।

यूरोपियों को अखरने लगी,

व्यापार का भारत के पक्ष में होना।।

सोना-चांदी देकर,

मसाला खरीदा नहीं जा सकता।

उपनिवेशों के धन से ही,

महसूस हुई व्यापार की आवश्यकता।।

साम्राज्य स्थापित कर,

व्यापारिक करों से पाया छूट।

बेरोक टोक व्यापार से

उपनिवेशों में शुरू किये धन की लूट।।

सर्वप्रथम पुर्तगालियों ने

इस नीति से लाभ कमाये।

उन्हें देखकर व्यापार करने,

हालैण्ड, फ्रांस व इंग्लैण्ड भी आये।।

अनेक देशों के आने से,

प्रतिस्पर्धा की हुई शुरूआत।

आपसी संघर्ष का कारण बना,

अब छोटी-छोटी बात।।

भिन्न देशों के व्यापारी,

भारत में जब आये।

अलग-अलग स्थानों पर

अपना व्यापारिक केन्द्र बनाये।।

गोवा, दमन, व्दीप से

पुर्तगालियों ने किया व्यापार।

सूरत, खम्भात, पटना पर

डचों का था अधिकार।।

मद्रास के निकट समुद्र किनारे,

फ्रांसीसियों ने की पांडीचेरी की स्थापना ।

शहर बनाने में सहायक हुई,

फ्रांसीस मार्टिन की अवधारणा।।

पांडिचेरी की स्थापना में,

फ्रांसीस मार्टिन ने दिखाई तन्मयता।

जहां दिखाई देती है,

आज भी फ्रांसीसी सभ्यता।।

चन्द्रनगर भी था,

फ्रांसिसियों की बस्ती जानी मानी।

मगर पांडिचेरी को बनाया,

फ्रांसिसियों ने राजनधानी।।

इंग्लैण्ड के व्यापारियों ने,

बस्ती बनाई समुद्र के आस-पास।

जिनमें प्रमुख थी,

कोलकत्ता, बम्बई और मद्रास।।

पुर्तगालियों की तरह अंग्रेज भी,

निःशुल्क व्यापार पाये।

मद्रास के निकट,

सेंटफोर्ट जार्ज किला बनाये।।

सत्रहवीं सदी के अंत में

बाहर हो गये हालैण्ड और पुर्तगाल।

तब फेलाया अंग्रेजों ने

उनके जगह व्यापार का जाल।।

पुर्तगाल और हालैण्ड की अपेक्षा,

फ्रांसीसियों की शक्ति थी अधिक।

अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच,

अब संघर्ष होना था स्वाभाविक।।

दक्षिण भारत के पूर्वी तट पर,

राज्य करता था कर्नाटक का नवाब।

इंग्लैण्ड और फ्रांस का उद्देश्य था,

नवाब दे उन्हें व्यापारिक लाभ।।

दोनों देश चाहते थे,

लाभ लेना ज्यादा से ज्यादा।

उत्तराधिकार के संघर्ष से,

दोनों ने लिया फायदा।।

उत्तराधिकार के संघर्ष ने,

हस्तक्षेप का अवसर दिया।

फ्रांसीसियों ने एक का पक्ष,

अंग्रेजो ने दूसरे का पक्ष लिया।।

अभी हमने जाना,

दक्षिण पूर्व में स्थित कर्नाटक का हाल।

पूर्वी तट पर स्थित था,

बिहार, उड़ीसा के साथ बंगाल।।

इस समय बंगाल था,

स्वतंत्र और संपन्न।

बड़े पैमाने पर प्राप्त किया,

विदेशी व्यापार से धन।।

बंगाल के शासक,

राजकाज में थे आजाद।

प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बनाये,

ढाका, पटना और मुर्शिदाबाद।।

अलीवर्दी खां की मृत्यु से,

सिराजुद्दौला ने पाई प्रसिध्दि।

कृषि, व्यापार और उद्योग से,

राजस्व आय में की वृध्दि।।

नवाबों के शासन में हुआ,

कृषि, व्यापार और उद्योग का विकास।

अपनी व्यापारिक सुविधाओं का,

दुरूपयोग करने लगे इंग्लैण्ड और फ्रांस।

सिराजुद्दौला ने रोकने का,

बहुत किया प्रयास।

किन्तु अंग्रेज नहीं माने,

ले आये युध्द की स्थिति पास।।

अंग्रेज और फ्रांसीसी दोनो,

किलेबंदी किये जबरदस्ती।

मीरजाफर को साथ लिया,

जो थे नवाब के सेनापति।।

मीरजाफर का अंग्रेजो से मिलना,

सिराजुद्दौला पर था वज्रपात।

अंग्रेजों से युध्द हार गया,

कारण बना मीरजाफर का विश्वासघात।।

अंग्रेजो से युध्द में,

सिराजुद्दौला को मिली पराजय।

23 जून 1757 को

प्लासी में अंग्रेजों की हुई विजय।।

प्लासी के युध्द से अंग्रेजों को,

बहुत हुआ आर्थिक लाभ।

अपार धन वसूल किये,

मीरजाफर को बनाकर नवाब।।

मीर जाफर नवाब था,

अंग्रेजों के अधीन।

हस्तक्षेप नहीं सह सका

नवाब ज्यादा दिन।।

मीरजाफर को सत्ता से हटाने,

विश्वासघात से लिया काम।

अगला नवाब बनाया जिसे,

मीर कासिम था उसका नाम।।

बंगाल में प्रसिध्द था,

चटगांव, वर्धमान, मिदनापुर जिला।

यहां से राजस्व वसूलने का

अंग्रेजों को स्थायी अधिकार मिला।।

अंग्रेजों के इस अधिकार से,

बंगाल का हुआ भारी नुकसान।

नई आर्थिक पाबंदी से,

नवाब मीरकासिम हो गया परेशान।।

बंगाल के नवाब मीर कासिम ने

व्यापार से हटा दिये सभी कर।

इससे सभी व्यापारियों की,

सुविधायें हो गयी बराबर।।

मीर कासिम के इस नीति का,

अंग्रेजों पर ज्यादा पड़ा प्रभाव।

व्यापारिक सुविधायें बंद होने से,

नवाब और अंग्रेजों के बीच बढ़ा तनाव।।

अंग्रेजों की गतिविधियां देख,

मीरकासिम को समझ आया यह।

अकेले लड़ नहीं सकता,

अंग्रेजों के विरूध्द युध्द वह।।

नवाब ने शुजाउद्दौला व मुगल सम्राट के

सहयोग से संयुक्त सेना बनाया।

अंग्रेजों ने संयुक्त सेना को,

1764 के बक्सर युध्द में हराया।।

बक्सर का युध्द आज तक,

किया जाता है याद।

दोनों के बीच संधि हुई,

इस युध्द के तुरंत बाद।।

बक्सर युध्द से हटा,

अंग्रेजों पर थी जो पाबंदी।

जिसमें इसका उल्लेख हुआ,

वह थी इलाहाबाद की संधि।।

प्लासी के युध्द से,

जो कार्य रह गये थे अधूरे।

बक्सर के युध्द ने,

उसे कर कर दिये पूरे।।

इलाहाबाद संधि की शर्तें,

तय हुआ अंग्रेजों के अनुसार।

शुजाउद्दौला को नवाब बनाने के बदले,

अवध में किया मुफ्त व्यापार।।

जरूरत पड़ने पर अंग्रेज,

अवध की सेना लेगा।

सेना पर जो खर्च हो,

उसे नवाब ही देगा।।

बंगाल, बिहार, उड़ीसा की,

अंग्रेजों को प्राप्त हुई दीवानी।

अपने इस एकाधिकार से,

बंगाल में की बहुत मनमानी।।

बंगाल में दीवानी पाकर,

कर वसूली पर दिया जोर।

जिम्मेदारी से बचने,

नहीं सम्भाली शासन की बागडोर।।

जिम्मेदारी और अधिकार के

अलग-अलग होने के कारण।

इस व्यवस्था से स्थापित हुआ,

बंगाल में व्दैध शासन।।

किसी भी विषय पर अंग्रेजों को,

नहीं देना होता था जवाब।

सभी प्रशासनिक कार्यों में

जिम्मेदार होता था नवाब।।

बंगाल के व्दैध शासन से,

नवाब की स्थिति हुई दीन-हीन।

मुगल सम्राट भी अब,

अंग्रेजों के हो गये अधीन।।

पहले राजस्व की वसूली,

उपज के आधार पर होती थी तय।

अब भूमि को नापकर,

लगान वसूलने का लिया गया निर्णय।।

लगान वसूलने का ठेका देकर,

आय निश्चित किये सालाना।

जनता से लगान लिये,

अब ठेकेदारों ने मनमाना।।

ठेकेदार और कर्मचारियों ने,

किसानों का किया बहुत शोषण।

लगान उपरांत जो कुछ बचता,

उसमें कठिन था परिवार का पोषण।।

किसानों की तकलीफें बढ़ा दी,

1770 का अकाल।

जिससे प्रभावित हुआ

पूरा का पूरा बंगाल।।

बंगाल की व्यवस्था में,

1773 का महत्व है खास।

ब्रिटिश संसद ने जब,

रेग्यूलेटिंग एक्ट किया पास।।

रेग्यूलेटिग एक्ट से बंगाल,

अंग्रेजों के सीधे नियंत्रण में आया।

शासन संभालने वारेन हेस्टिंगज को,

बंगाल का गवर्नर जनरल बनाया।।

वारेन हेस्टिंग्ज ने जब,

बंगाल में संभाली सत्ता।

मुर्शीदाबाद के बदले,

राजधानी बनी कलकत्ता।।

वारेन हेस्टिंगज ने भारतीय शासकों से

शुरू की लड़ाई।

अवध, मैसूर, मराठों के साथ,

समयानुसार नीति अपनाई।।

अवध से मित्रता कर,

बंगाल में हस्तक्षेप से रखा दूर।

मैसूर से युध्द कर हैदर अली को

संधि करने पर किया मजबूर।।

अंग्रेजों की नीति से,

हैदर अली था क्रुध्द।

1768-69 में लड़ा गया,

प्रथम आंग्ल-मैसूर युध्द।।

प्रथम मैसूर युध्द का अंत किये,

मद्रास संधि में हस्ताक्षर कर।

युध्द समाप्ति का निर्णय हुआ,

दोनो की परस्पर सहमति पर।।

मद्रास की संधि

दोनों शासकों ने किया ग्राह्य।

एक-दूसरे को सहयोग की बात कही

आक्रमण होने पर बाह्य।।

सबसे पहले अंग्रेजों ने

उल्लंघन की मद्रास संधि की बात।

पेशवा के आक्रमण करने पर

नहीं दिया हैदर अली का साथ।।

पेशवा के साथ युध्द में,

मैसूर की हुई हार।

हैदर अली ने माना

अंग्रेजों को इसका जिम्मेदार।।

इस घटना से हैदर अली की,

अंग्रेजों के प्रति बढ़ी खीझ।

1780 में आंग्ल मैसूर युध्द,

शुरू हुआ दोनों सेना के बीच।।

व्दितीय आंग्ल मैसूर युध्द का,

परिणाम रहा बराबर।

युध्द के बाद किए,

मैंगलौर संधि पर हस्ताक्षर।।

हैदरअली के बाद,

बना जो मैसूर का शान

विव्दान और बहादुर

नाम था टीपू सुल्तान।।

फ्रांस और तुर्की तक,

जिसका बजता थी डंका।

शत्रु देश के मित्र होने पर,

अंग्रेज करने लगे शंका।।

अब अंग्रेज हो गये,

टीपू के विरूध्द।

दोनों के बीच लडा़ गया,

त्रावणकोर को लेकर युध्द।।

अंग्रेजों से युध्द में,

टीपू की रणनीति न आई काम।

अंग्रेजों का साथ दिया,

मराठे और हैदराबाद के निजाम।।

टीपू ने अकेले ही,

तीनों से युध्द लड़ा।

पराजित होने पर

रंगपट्टनम की संधि करना पड़ा।

रंगपट्टनम की संधि से टीपू को,

अपमान पड़े अपनाने।

अपने आधे राज्य के साथ,

तीन करोड़ देने थे हरजाने।।

गवर्नर जनरल के रूप में

लार्ड वेलेजली का हुआ आगमन।

1798 में शुरू किया,

ब्रिटिश भारत का दूसरा चरण।।

सने साम्राज्य विस्तार की,

जो नीति अपनाई।

इतिहास में वह,

सहायक संधि के नाम से प्रसिध्दि पाई।।

लार्ड वेलेजली ने इस संधि के,

दो उद्देश्य किये निश्चित।

प्रथम उन क्षेत्रों की रक्षा करना,

जो कंपनी व्दारा की गई हो विजित।।

कंपनी राज्य की रक्षा,

था उद्देश्य व्दितीय।

देशी राज्यों से संधि कर

मित्र बनाया विश्वसनीय।।

संधि से बंधे राज्य में

अंग्रेज सेना का होता था आना-जाना।

सेना के सभी खर्च,

देशी राज्यों को पड़ता था उठाना।।

संधि के बाद देशी राज्य

अंग्रेज रेजीडेंट रखने को हुये मजबूर।

अन्य देशों से संधि के पहले,

अंग्रेजों की अनुमति लेते थे जरूर।।

संधि के बाद,

अन्य देशों की हटाई सेना।

निश्चित हुआ कंपनी को

वार्षिक कर देना।।

वेलेजली ने सबसे पहले,

निजाम से संधि किया।

फिर अवध के नवाब को,

सहायक संधि के घेरे में लिया।

वेलेजली ने मैसूर पर थी,

इस संधि से करना चाहा अधिकार।

संधि की शर्तें जानकर,

टीपू ने कर दिया इंकार।

1799 के चतुर्थ युध्द में,

टीपू हुआ वीर गति को प्राप्त।

मैसूर से हैदरअली के,

वंश का शासन हुआ समाप्त।।

हैदरअली ने मैसूर पर,

जिन्हें हटाकर किया था अधिकार।

चतुर्थ मैसूर युध्द के बाद

पुनः शासक बन गये वाडियार।।

वेलेजली ने सहायक संधि

जिन राज्यों से आगे किया और।

उन राज्यों में प्रमुख थे,

कर्नाटक, सूरत व तंजौर।।

अब अंग्रेजों के सामने,

मराठा शक्ति ही रहा शेष।

उससे सहायक संधि करने

प्रयत्न करना पड़ा विशेष।।

मराठा संघर्ष का फायदा उठा,

सहायक संधि का किया प्रस्ताव।

मराठों से संधि कर,

अंग्रेज बढ़ाना चाहते थे प्रभाव।।

प्रथम मराठा युध्द में,

पेश्वा बाजीराव व्दितीय की हुई हार।

बेसिन की संधि व्दारा

सहायक संधि की शर्तें की स्वीकार।।

व्दितीय मराठा युद्ध को

अंग्रेजों ने जीत लिया।

जिसमें भाग लिया था,

भोंसले और सिंधिया।।

मराठों के विरूध्द अंग्रेजों ने

अपना अभियान रखा जारी।

तृतीय युध्द में होल्कर से

अंग्रेजों को नुकसान हुआ भारी।।

वेलेजली की सहायक संधि,

मराठों को लगा अपमान।

इससे मराठों का,

पुनः जागा स्वाभिमान।।

निर्णायक युध्द के लिये,

मराठे हो गये तत्पर।

चतुर्थ मराठा युध्द लड़े,

पेशवा, भोंसले और होल्कर।।

मराठा शक्ति के अंत से,

अंग्रेज बन गये अधिराज।

बाद में हेस्टिंग्ज और बैंटिक ने

गवर्नर जनरल बन किया काम काज।।

समाज सुधारक के रूप में,

विलियम बैंटिंक की होती है गणना।

उनका प्रमुख कार्य था सती,

बाल विवाह व नरबली को बंद करना।

राजस्व वसूली के लिये

टोडरमल की व्यवस्था को अपनाया।

तीस वर्षों के लिये,

लगान निश्चित करवाया।।

विलियम बैंटिंक ने,

युध्द के प्रति दिखाई नरमी।

सैनिकों की संख्या कम कर

प्रशासनिक व्यय में की कमी।।

1818 तक,

मराठों का हो गया पतन।

अंग्रेजों ने संधि कर,

पंजाब व सिंध पर अधिकार का किया जतन।।

इन दिनों रूस और इंग्लैण्ड के बीच,

चल रहा था तनाव।

अंग्रेजों की अफगानिस्तान नीति,

पर दिखा इसका प्रभाव।।

सदैव लगा रहता था,

अंग्रेजों को यह डर।

रूस आक्रमण कर सकता है,

अफगानिस्तान के रास्ते भारत पर।।

अफगानिस्तान से लगा था,

भारत का सिंध प्रांत।

सीमा पर रूसी गतिविधि से

अंग्रेज थे भयाक्रांत।।

सिंध के अमीर को,

सहायक संधि के लिये बाध्य किया।

अंततः सिंध को

अपने अधिकार में कर लिया।।

इसके बाद अंग्रेजों ने,

पंजाब पर नजर डाली।

रणजीत सिंह के रूप में था

वहां राजा था शक्तिशाली।।

रणजीत सिंह के रहते तक,

अंग्रेज न पा सके पार।

उनकी मृत्यु पर 1849 में,

पंजाब पर कर लिया अधिकार।।

उसके बाद का गवर्नर जनरल,

लार्ड डलहौजी था बड़ा क्रूर।

अन्यायपूर्ण नीतियों को मानने,

देशी राज्यों को किया मजबूर।।

लार्ड डलहौजी की नीति मानने,

भारतीय शासक हुये बाध्य।

अपनी इस नीति से डलहौजी,

हड़पे कई देशी राज्य।।

राज्यों को हासिल करने की

डलहौजी ने जो नीति अपनाया।

भारतीय इतिहास में वह,

हड़प नीति कहलाया।।

डलहौजी की हड़प नीति की,

प्रमुख बातें थी तीन।

प्रथम निःसंतान राजाओं के राज्य को,

कर लिया अपने आधीन।।

व्दितीय नीति थी कुशासन दिखाकर

देशी राजाओं को हराना।

तृतीय नीति थी युध्द व्दारा

देशी राज्यों पर अधिकार जमाना।।

सतारा, जैपुर, झांसी, नागपुर,

के राजा थे निःसंतान।

प्रथम नीति के अंतर्गत,

इन्हें हड़पना हुआ आसान।।

अवध को हड़पने,

कुशासन बना आधार।

युध्द व्दारा पंजाब पर

किया अपना अधिकार।।

डलहौजी के शासन काल में,

हुये कुछ प्रशासनिक सुधार।

जिसमें प्रमुख है,

डाक कमीशनरी, परिवहन व संचार।।

मैकाले शिक्षा नीति से

सुधारों का हुआ चलन।

शिक्षा को व्यवहारिक बनाने,

शिक्षा आयोग का किया गठन।।

1853 में मुंबई थाणे के बीच

भारत में चली पहली रेलगाड़ी।

ये सभी सुधार कार्य थे,

प्रशासनिक नियंत्रण वाली।।

अपने स्वार्थ को ध्यान में रख,

अंग्रेजो ने रेल चलाई ।

कच्चा माल इकट्ठा करके,

तैयार माल भेजने की सुविधा पाई।।

रेल चलने से आये लोग,

एक दूसरे के पास।

जिसके परिणामस्वरूप हुआ,

भारत का राजनैतिक विकास।।

डलहौजी के हड़प नीति से

देशी राज्यों में था असंतोष।

इस नीति से 1857 में

देशी राजाओं में भड़का आक्रोश।।

अंग्रेजी शासन का भारतीय जन जीवन पर प्रभाव

शासक की आमदनी,

टिका होता था जिस पर।

उसका मुख्य स्त्रोत था,

राज्य का भूमि कर।।

शुरूआत में अंग्रेजों ने,

प्रचलित कर व्यवस्था अपनाई।

बाद में निर्धारण व संग्रहण की,

अलग अलग व्यवस्था बनाई।।

अलग-अलग प्रदेशों के अनुसार,

कर वसूल करने की, की तैयारी।

प्रदेशों के अनुसार ये प्रथा थी,

रैयतवाड़ी, महलवाड़ी व जमींदारी।।

पहले दौर में लगान वसूली की,

प्रथा की यह आम।

लगान वसूली के अधिकार को,

कर दिया गया नीलाम ।।

अधिक पैसा जमा करने का,

जो करता वादा।

लगान वसूल करने का अधिकार,

प्राप्त करता वह ज्यादा।।

ठेकेदार का प्रयास होता,

किसान से ज्यादा लगान प्राप्त करें।

किसानों का कुछ भी हो,

केवल उनका घर भरे।।

लगान की इस व्यवस्था में,

ठेकेदार थे मस्त।

किसानों का शोषण रोकने

किया पांच साला बंदोबस्त।।

किसानों की स्थिति में,

नहीं हुआ कुछ सुधार।

लगान वसूली की नीति में,

परिवर्तन आया बार बार।।

1789 में बंगाल प्रांत से,

लगान वसूली की नई व्यवस्था आया।

जमींदारों से की गई समझौता,

स्थायी बंदोबस्त कहलाया

स्थायी बंदोबस्त को लाने में था,

लार्ड कार्नवालिस का हाथ।

भू-राजस्व वसूली का समझौता किया

बड़े जमींदारों के साथ।।

कार्नवालिस ने निश्चित किया,

स्थायी भू-राजस्व का आना।

जमीदारों को दस साल के लिये,

जमीन का मालिक माना।।

1789-90 का स्थायी बंदोबस्त

किसानों के लिये था सख्त।

लगान नहीं पटाने पर,

किसानों की जमीन हो जाती थी जब्त।।

कंपनी को निश्चित लगान जमा करने का

जमींदारों को मिला दायित्व।

कार्नवालिस की इस व्यवस्था से,

कंपनी को प्राप्त हुआ आर्थिक स्थयित्व।।

किसानों या सरकार को,

इससे फायदा हुआ थोड़ी।

स्थायी बंदोबस्त की थी,

यह सबसे बड़ी कमजोरी।।

स्थायी बंदोबस्त का लक्ष्य था

कंपनी के आय को निश्चित बनाना।

न कि कृषि विकास से,

उत्पादन को बढ़ाना।।

किसान या रैयत के साथ,

किया जाने वाला सीधा करार।

बम्बई व मद्रास प्रांत में लागू,

रैयतवाड़ी व्यवस्था का था मूलाधार।।

भू-राजस्व तय हुआ,

रैयतवाड़ी व्यवस्था के अंतर्गत।

उत्पादन खर्च निकालकर

बचत का पचास प्रतिशत।।

सीधे करार के बावजूद,

सुधरा नहीं किसानों का हाल।

बंबई व मद्रास प्रेसीडेंसी में

लागू रहा यह तीस साल।।

पूरे गांव के कृषक परिवारों पर

लगान जमा करने की थी जिम्मेदारी।

पश्चिमी उत्तरप्रदेश में लागू,

यह व्यवस्था कहलाई महलवाड़ी।।

रैयतवाड़ी की तरह,

आधा हिस्सा होता था लगान।

पंजाब, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ में,

लागू किया गया एक समान।।

छत्तीसगढ़ में अंग्रेजो ने,

पटेल का पद समाप्त किया।

गांव से लगान लेने,

नया पद बनाये गौंटिया।।

लगान की ऊंची दर,

किसानों का बना काल।

लगान चुकाने कर्ज लिया,

साबित हुआ जो भंवर जाल।।

समय पर कर्ज नहीं पटाने पर,

किसानों की जमीन हो जाती थी हड़प।

जमींदार व साहूकारों से

इस बात पर होती थी झड़प।।

कर्ज के बोझ से,

किसानों की हालत हुई खराब।

राजस्व नीति का विरोध कर,

कंपनी शासन को दिया जवाब।।

कंपनी की नीतियों से,

हस्तकारों का भी नहीं हुआ भला।

धीरे-धीरे नष्ट होने लगी,

शिल्पकारी व हस्तकला।।

कंपनी शासन ने खोला,

इंग्लैण्ड से आने वाली वस्तु का रास्ता।

कर मुक्त होने पर

बाहर से आने वाली वस्तुयें हुई सस्ता।।

विदेशी सस्ती वस्तुओं से

कारीगरों का व्यवसाय उजड़ा।

अपनी बस्ती छोड़कर,

उन्हें अन्यत्र जाना पड़ा।।

वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में

ढाका था भारतीय मैनचेस्टर।

बेरोजगार कारीगर,

कृषि पर होने लगे निर्भर।।

उद्योग नीति से,

कारीगरों में फैला रोष।

फलतः कंपनी शासन के प्रति,

उनमें भी पनपने लगा असंतोष।।

अब अंग्रेज वनोपज आधारित

उद्योग पर लगाये ध्यान।

नये नये उद्योग लगाये

अपने शासन के दौरान।।

इसी समय भारत में

बिछी रेलों की पटरियां।

जिसके लिये आवश्यक थी

जंगल की मजबूत लकड़ियां।।

इंग्लैण्ड की मिलों के लिये

भारत के लिये लकड़ी भेजी।

भारतीय वनों की कटाई में

इससे आ गई तेजी।।

कंपनी की वन नीति से

आदिवासी हुये अस्त-व्यस्त।

इससे प्रभावित हुई,

उनकी जीवन शैली जबरदस्त।।

भारतीय बाजार भर गये,

कारखानों में उत्पादन के कारण।

अंग्रेजों ने लाभ कमाये,

दोहन कर भारतीय संसाधन।।

बंदरगाह एवं सड़कों से,

किये वस्तुओं का परिवहन।

रेलवे की शुरूआत थी,

एक क्रांतिकारी परिवर्तन।।

परिवहन साधनों के विकास से,

संपर्क में आये लोग आम।

1853 में प्रारंभ हुई,

भारत में टेलीग्राम।।

संचार एवं परिवहन विकास से,

लोग एक दूसरे के संपर्क में आये।

जिससे लोगों में बढ़ी,

राष्ट्रीयता की भावनायें।।

कंपनी शासन के पहले भारत में,

शिक्षा पध्दति थी पुरातन।

जिसमें प्रचलित थी,

धर्म, कानून ज्योतिष और व्याकरण।।

ब्रिटिश शासकों ने भारत में,

पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान की शिक्षा लाई।

1833 के चार्टर एक्ट पर,

1835 में मैकाले शिक्षा नीति आयी।।

मैकाले चाहता था,

जन मानस को पक्ष में करना।

आवश्यक किया गया

लोगों का अंग्रेजी माध्यम से पढ़ना।।

नई शिक्षा से समाज में,

दिखा सकारात्मक परिवर्तन।

राजा राम मोहन राय ने।

मैकाले नीति का किया समर्थन।।

मैकाले शिक्षा से रायपुर में,

आरंभ हुआ स्कूल खोलने का काम।

जिनमें प्रसिध्द हुआ,

जे.एन.पांडे राजकुमार कालेज का नाम।।

राजकुमार कालेज में,

राजकुमारों को दी जाती थी शिक्षा।

इंडियन कौंसिल आफ एजुकेशन से,

संचालित होती थी परीक्षा।।

समाचार पत्रों के द्वारा,

भारत ने प्रकट किये विचार।

प्रसिध्द समाचार पत्र थे,

द हिन्दू, स्वदेश व अमृत बाजार।।

अन्य समाचार पत्रों के नाम थे,

केसरी, मराठा, स्वदेश व इंदुप्रकाश।

सभी ने मिलकर जगाई,

लोगों में स्वतंत्रता की आस।।

पं. माधव राव सप्रे थे

छततीसगढ़ में पत्रकारिता का जनक।

जिनकी पत्रकारिता से फैली,

लोगों में स्वतंत्रता के प्रति सनक।।

छत्तीसगढ़ के समाचार पत्र थे,

छत्तीसगढ़ मित्र, हिंद केसरी महाकौशल।

जिससे मिला जनता को

चेतना व जागरूकता को बल।।

भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

अंग्रेज शासन करने लगे,

भारत का शासक बन।

जिससे प्रभावित हुआ,

शिक्षा, हस्तकारी, शिल्प व वन।।

अंग्रेजी नीतियों ने

भारतीयों को किया आहत।

जिसके कारण हुआ,

1765 से 1856 के बीच कई बगावत।।

बगावत करने वाले थे,

विभिन्न समूह व क्षेत्रों के वासी।

जिनमें प्रमुख थे,

बहावी, संथाल, मोपला व सन्यासी।।

शक्तिशाली अंग्रेजों के लिये,

इन्हें कुचलना था आसान।

1857 के विद्रोह में शामिल हुये,

कारीगर, जमींदार,रजवाड़े व किसान।।

1765 से 1857 तक अंग्रेज

अपने हितों को साधने में रहे मस्त।

अंग्रेजों की नीतियों से

पुराने शासक व जनता हुये त्रस्त।

अंग्रेजों की नीतियों से,

भारतीय शासक हुये रुष्ट।

1857 में विद्रोहियों का साथ दिया,

जो ब्रिटिश नीतियों से थे असंतुष्ट।।

अंग्रेजों की नीतियों से,

किसान व दस्तकार हुये बर्बाद।

लगान व चुंगीकर के लिये,

इन्हें बेचना पड़ा जमीन जायदाद।।

पक्षपातपूर्ण कर नीति से,

अपार धन किया संचित।

ऊंची नागरिक व सैनिक सेवा से,

भारतीयों को रखा वंचित।।

बुराईयों को दूर करने

शिक्षित वर्ग ने दिया विचार।

जिससे कंपनी शासन ने किया,

धार्मिक सामाजिक सुधार।।

सामाजिक, धार्मिक सुधार का

लोगों को हुआ जब बोध।

तब नये कानून का,

रूढ़िवादी वर्ग ने किया विरोध।।

इन सबके परिणाम स्वरूप

भारतीय जनमानस में फैली शंका।

जिससे अंग्रेजी शासन के प्रति।

1857 में बजा विद्रोह की डंका।।

अंग्रेजों ने प्रतिबंधित किया

दाढ़ी,पगड़ी और तिलक लगाना।

सैनिकों को बाध्य किया

समुद्र पार करके विदेश जाना।।

उन दिनों समुद्र पार जाना,

माना जाता था धर्म विरुध्द।

एनफील्ड रायफल के प्रयोग से,

भारतीय सैनिक हुये क्रुध्द।।

सैनिकों को लगा कारतूस में है

गाय व सुअर की चर्बी के अवशेष।

जिसके कारण लगी,

धार्मिक भावनाओं को ठेस।।

बैरकपुर छावनी के मंगल पांडे ने

कारतूस के प्रयोग से किया इंकार।

अंग्रेज अधिकारी ह्यूसन ने,

मंगल पांडे को किया गिरफ्तार।

ह्यूसन के आदेश से,

मंगल पांडे को क्रोध आई।

क्रोधित होकर पांडे ने,

ह्यूसन पर गोली चलायी।।

जंगल की आग की तरह,

फैली बैरकपुर की यह घटना।

10 मई की तिथि निश्चित हुई

मेरठ छावनी में विद्रोह करना।।

दिल्ली के सैनिक साथ दिये,

विद्रोह की खबर पाकर।

बहादुर शाह जफर को नेतृत्व दिये

सैनिकों ने दिल्ली आकर।।

विद्रोह से प्रभावित हुये,

उत्तरप्रदेश, बिहार व दिल्ली जैसे स्थान।

इस विद्रोह में शामिल रहे,

कारीगर, राजा, जनता व किसान।।

दिल्ली में विद्रोह को नेतृत्व,

बहादुरशाह जफर ने दिया।

किन्तु विद्रोह का संचालन,

सेनापति बख्त खां ने किया।।

हनुमान एवं वीरनारायण के नेतृत्व में

विद्रोह का केन्द्र बना छत्तीसगढ़।

नाना साहब व तात्याटोपे ने

कानपुर में नेतृत्व किया आगे बढ़।।

1857 के विद्रोह में

जिसने सर्वाधिक प्रसिध्दि पाई।

वह थी झांसी की,

रानी लक्ष्मी बाई।।

बिहार में कुंवर सिंह ने

विद्रोह में दिखाया अपना कौशल।

लखनऊ में नेतृत्व किया

अवध की बेगम हजरत महल।।

सहेलखंड में अहमदुल्ला ने

विद्रोहियों को दी सहमति।

अंग्रेजों का सामना कर

लक्ष्मीबाई ने पाई वीरगति।।

रानी लक्ष्मीबाई थी,

वीरता से ओत-प्रोत।

जिसकी कहानी आज भी है,

हम सबके लिये प्रेरणा स्त्रोत।।

बलौदाबाजार के पास है,

एक प्रसिध्द स्थान।

वीरनारायण की जन्म स्थली

वह है सोनाखान।।

जनहित कार्यों के फलस्वरूप,

वीर नारायण सिंह थे लोकप्रिय ।

1857 के विद्रोह में

छततीसगढ़ मे थे सक्रिय।।

1856 में सोनाखान में,

भयंकर पड़ा अकाल।

अन्न के अभाव में,

लोगों का हुआ बुरा हाल।।

लोगों की जीवन रक्षा के लिये

वीर नारायण ने गोदाम लूट लिया।

गोदाम में एकत्रित अनाज,

जनता में बंटवा दिया।।

शिकायत पर अंग्रेजों ने

वीर नारायण को बंदी बनाया।

बाद में रायपुर लाकर,

दिखावे का मुकदमा चलाया।।

10 दिसंबर 1857 को

यह महान सपूत हो गया शहीद।

जनमानस में जिन्दा रहा,

जो जगाया उसने उम्मीद।।

वीरनारायण सिंह के समान,

छत्तीसगढ़ में था एक और सपूत

रायपुर फौजी छावनी का वह,

मेग्जीन लश्कर था हनुमान सिंह राजपूत।

हनुमान सिंह ने रायपुर में,

स्वतंत्रता संघर्ष को दिया धार।

सिडवेल की हत्या कर,

हनुमान सिंह हो गया फरार।।

22 जनवरी 1858 को,

इन्हें दी गई सार्वजनिक फांसी।

इनके कार्यो से प्रेरित हुये,

छत्तीसगढ़ के हर वासी।।

1857 का विद्रोह फैला,

जैसे जंगल की हो आग।

विद्रोह से प्रभावित रहा,

भारत का व्यापक भू-भाग।।

असफलता के बावजूद

भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना आई।

शासन के विरुध्द विद्रोह का भय

अंग्रेजों को सदैव सताई।।

शिक्षित वर्ग व रजवाड़ों के,

विद्रोह में शमिल नही हाने के कारण।

विद्रोह असफल रहा

अंत करने में ब्रिटिश शासन।।

असफलता का प्रमुख कारण था,

केन्द्रीय नेतृत्व का अभाव।

लोगों को संगठित करने का

अब मन में पैदा हुआ भाव।।

असफल रहकर भी,

शासन को दिया गहरा झटका।

आगे भी विद्रोह होगा,

अंग्रेजों को विश्वास हुआ पक्का।।

विद्रोह का संगठित रूप दिखा,

1857 की असफलता के बाद।

फलस्वरूप भारतीय राजनीति में

विकसित हुआ राष्ट्रवाद।।

प्रजा को शांत करना चाहा,

इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया ने।

1 नवंबर 1858 को

एक घोषणा पत्र जारी किया।।

1858 की घोषणा के बाद

भारत की शासक बनी इंग्लैण्ड की संसद।

सम्राट के प्रतिनिधित्व के रूप में

बनाया गया वायसराय का पद।।

अहस्तक्षेप की नीति पर

सहमत थी इंग्लैण्ड की महारानी।

परम्पराओं के संरक्षण की बात

सैध्दांतिक रूप से मानी।।

गवर्नर जनरल प्रमुख प्रशासक बना,

लागू हुआ 1833 का चार्टर जब।

गवर्नर जनरल को कहा गया,

सम्राट के प्रतिनिधि रूप में वायसराय अब।।

भारतीय समाज में नये विचार

19 वीं सदी के समाज में

नये विचारों के कारण।

सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में

आया नव जागरण।।

सुविधा के लिये अंग्रेजों ने

प्रवाहित की अंग्रेजी शिक्षा की धारा।

भारत में पश्चिमी देशों की

आई, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा।

इससे भारतीय जान पाये

क्या है लोकतंत्र, तार्किकता व वैज्ञानिकता।

ये आधुनिक विचार कहलाये

पश्चिमी आधुनिक सभ्यता।।

लोगों ने कार्य किया,

समाज की जरूरत समझकर।

जिससे दूर होने लगी,

जाति प्रथा अंधविश्वास व आडंबर।।

पश्चिमी विचारों से प्रेरित हो,

किये सामाजिक व धार्मिक सुधार।

प्राचीन धर्म व दर्शन शास्त्र

बना जिसका आधार।।

लेखों और प्रवचनों से,

जगी नव जागरण की आस।

विचारों को जनता तक,

पहुंचाने का किया गया प्रयास।।

19 वीं सदी का भारत,

नवीन विचारों के सानिध्य में रहा।

आधुनिक विचारों से प्रेरित,

इस भावना को पुनर्जागरण कहा।।

अब हम करते हैं,

सामाजिक, धार्मिक सुधारों की बात।

बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र से

भारत में हुई जिसकी शुरूआत।।

अंग्रेजी शिक्षा से जाने

स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा।

सुधार कार्य आरंभ हुआ।

मध्यम वर्गीय लोगों के व्दारा।।

दोषों को दूर करने,

शिक्षित भारतीयों ने सोचा उपाय।

पहला कदम उठाने वाला,

वह था राजा राम मोहन राय।।

राजाराम मोहन राय,

बंगाल का था सपूत।

भारत में कहा गया,

पुनर्जागरण का अग्रदूत।।

वे चाहते थे कि लोग

पश्चिमी आधुनिकता को जाने।

इसलिये जोर दिया

अंग्रेजी शिक्षा को अपनाने।।

कलकत्ता में उन्होंने

अंग्रेजी स्कूल चलाया।

विभिन्न धर्म ग्रंथों का

बंगला में अनुवाद कराया।।

सुधार कार्यों में तेजी लाने

1828 में बनाया ब्रह्म समाज।

आडंबर के विरुध्द हुआ

जिससे आंदोलन का आगाज।।

पंजाब में दयानंद सरस्वती ने,

1875 में की आर्य समाज की स्थापना।

जिसके प्रभाव से लोगों ने,

अंधविश्वास पर चलने से किया मना।।

इनके सिध्दांतों को,

जन समर्थन मिला पूरा।

किन्तु नारी सुधार के बिना,

समाज सुधार था अधूरा।।

19 वीं सदी की शुरुआत में,

खराब स्थिति में थी नारी।

बाल विवाह की प्रथा

जीवन पर पड़ती थी भारी।।

पति के मृत्यु से

बचपन में विधवा हो जाती।

सामाजिक बंधनों के कारण

स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जी नहीं पाती।।

पति के साथ चिता में जलकर

बाध्य किया जाता होने को सती।

कष्टमय जीवन व्यतीत कर

प्रेम दिखाते मृतात्मा के प्रति।।

इसके अलावा उस समय

बहु विवाह प्रथा के अनुसार।

पुरुष के हो सकते थे

पत्नि दो, तीन या चार।।

कन्या वध व दहेज प्रथा ने

अवरुध्द किया नारी विकास।

नारियों की शैक्षिक स्तर से

समाज सुधारक हुये निराश।।

नारी शिक्षा के लिये

समाज सुधारकों ने किया प्रयास।

अवसर पाकर हुआ

महिलाओं का अब विकास।।

राजा राम मोहनराय ने

सती प्रथा बंद कराया।

शास्त्रों के आधार पर

अमानवीय धर्म विरुध्द बतलाया।।

1829 में राम मोहनराय को

विलियम बैंटिक ने सहयोग दिया।

सती प्रथा को बंद करने

एक कानून लागू किया।।

दयानंद सरस्वती का रहा

समाज सुधार में प्रमुख स्थान।

विधवा पुनर्विवाह व नारी शिक्षा में

इनका रहा खूब योगदान।।

विधवा पुनर्विवाह से

बदली समाज की धारा।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने

लगा दिया अपना जीवन सारा।।

शास्त्री भंडारकर गोविन्द रानाडे,

ऐसे हैं प्रसिद्ध नाम।

विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में

जिन्होंने किये बहुत काम।।

1856 के कानून से

समाज में उम्मीद जगा।

जागरूकता के परिणाम स्वरूप

विधवा पुनर्विवाह होने लगा।।

बाल विवाह पर रोक लगाने

केशवचन्द्र सेन ने भूमिका निभाई।

बहरामजी मालाबारी ने

विवाह की आयु निश्चित कराई।।

बाल विवाह को रोकने

अंग्रेजी सरकार ने कानून बनाया।

सन् 1929 में पारित

यह शारदा एक्ट कहलाया।।

19वीं सदी में कार्य किये गये,

इन कुप्रथाओं को करने समाप्त।

जन जागरण व शिक्षा से हुइ,

कुप्रथाओं पर विजय प्राप्त।।

नारी शिक्षा के लिये भी

सुधारकों ने हल्ला बोला।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

कलकत्ता में बेथन स्कूल खोला।।

1849 में स्थापित बेथन

महिलाओं का स्कूल था पहला।

विद्यासागर का यह प्रयास

रूढ़िवादियों को बहुत खला।।

शिक्षा के क्षेत्र में

सैयद अहमद खां का नाम आया।

मुस्लिमों के विकास हेतु

अलगीगढ़ आंदोलन चलाया।।

शिक्षा प्राप्त कर

मुस्लिम समाज आगे बढ़े।

लड़के और लड़कियां

साथ साथ भविष्य गढ़े।।

निम्न जाति की शिक्षा के लिये

प्रसिध्द हुआ महराष्ट्र का पूना।

ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई ने

बालिका शिक्षा में कार्य किय दूना।।

समाज के संपूर्ण विकास पर

समाज सुधारकों ने दिया बल।

नारी शिक्षा में देखा

नारी समस्या का स्थायी हल।।

नारी सुधार कार्यक्रम को

रूढ़िवादियों के विरोध झेलने पड़े।

फिर भी कुछ माता पिता

बेटियों की शिक्षा के लिये आगे बढ़े।।

महाराष्ट्र के ब्राम्हण परिवार

जिन्होंने रूढ़िवादियों की बात नहीं मानी।

रमाबाई के माता-पिता की

अब आओ सुने कहानी।।

पत्नी को संस्कृत पढ़ाकर

शुरू किया परंपराओं को तोड़ना।

रूढ़िवादियों के विरोध से

गांव पड़ा छोड़ना।।

जंगल में जाकर

कुटिया बनाकर रहा।

बेटी रमा बाई के साथ

असंख्य दुःख सहा।।

16 वर्ष की थी

जब रमा बाई।

मां बाप की मृत्यु से

अनाथ हुये बहन और भाई।।

आश्रय नहीं मिलने से

भाई बहन को पड़ा भटकना।

कठिनाईयों के बावजूद

नहीं छोड़े लिखना और पढ़ना।।

कलकत्ता पहुंचकर रमा बाई,

राममोहनराय के संपर्क में आई।

संस्कृत में भाषण देकर

पंडिता रमा बाई सरस्वती कहलाई।।

महिलाओं को शिक्षित करने

समर्पित किया तन मन धन।

विधवाओं के लिये खोली

आश्रम व स्कूल शारदा सदन।।

जाति प्रथा को भी मिटाने

सुधारकों ने किये जतन।

ब्रह्म समाज के प्रभाव से,

महाराष्ट्र में हुआ परमहंस सभा का गठन।।

रूढ़िवादियों के डर से

गुप्त रूप से किये काम।

1865 में मिला

इसे प्रार्थना समाज का नाम।।

महादेव गोविन्द रानाडे ने

प्रार्थना समाज में बढ़ चढ़कर किया कार्य।

जिन्होंने नहीं किया,

जातिगत भेदभाव व छुआछूत स्वीकार्य।।

निम्न जाति के उध्दार में

जिन्होंने सबसे ज्यादा प्रभाव डाली।

वह था ज्योतिबा फूले,

जो जन्म से था माली।।

निम्न जाति के उध्दार में

जिन्होंने किया सर्वाधिक काज।

1873 में स्थापित

वह था सत्य शोधक समाज।।

दलितों को शिक्षित करने

ज्योतिबा ने किये कार्य महान।

निम्न जाति को दिलाना चाहा

अधिकार सबके समान।।

20 वीं सदी में महात्मागांधी ने

जाति प्रथा पर किया प्रहार।

हरिजन सेवक संघ की स्थापना से

दलितों का हुआ उध्दार।।

छत्तीसगढ़ में सुंदरलाल शर्मा

दलित उध्दार के लिये आगे आया।

राजीव लोचन मंदिर में प्रवेश दिलाकर

सभी को जनेऊ धारण करवाया।।

.

डा. भीमराव अंबेडकर ने

की कानून की शिक्षा प्राप्त।

दलित कल्याण के लिये

जाति प्रथा को करना चाहा समाप्त।।

जातिगत भेदभाव से

दलितों का जीना था दुश्वार।

अलग निर्वाचन के व्दारा

दलितों को बनाया राजनैतिक भागीदार।

दलितों को ऊंचा उठाने,

इन्होंने किया कार्य महान।

संविधान बनाने में है

इनका महत्वपूर्ण योगदान।।

समाज सुधारकों के प्रयास से

बदली है समाज की सूरत।

पूरी तरह समाप्त करने

आज भी है जन जागरण की जरूरत।।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

1857 के प्रथम,

आंदोलन के पश्चात्।

भारत के इतिहास में

हुई नये युग की शुरूआत।।

प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन से

जनता को हुआ एहसास।

लोगों को एक दूसरे के

समीप लाने किये प्रयास।।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन था

विदेशी आधिपत्य के विरुध्द संघर्ष।

शासन के अत्याचारों से

लोगों ने भाग लिया सहर्ष।।

राष्ट्रीय एकता देश प्रेम

सांस्कृतिक परंपराओं पर अभिमान।

इन सबका रहा

राष्ट्रवाद के उदय में मुख्य स्थान।।

औद्योगिक क्रांति से

इंग्लैड का बढ़ा व्यापार।

कच्चे व तैयार माल के लिये

उन्हें चाहिये था बाजार।

अंग्रेजों की आर्थिक नीति से,

किसान, कारीगर, शिल्पकार हुये बर्बाद।

विरोध से उत्पन्न विचार

कहलाया आर्थिक राष्ट्रवाद।।

उस समय से समाज में

शिक्षित मध्यम वर्ग का हुआ उदय।

जिससे बना समाज का

वातावरण राष्ट्रीयता मय।।

मध्यम वर्ग ने किया,

आधुनिक विचारों को आत्म सात।

जिससे पहुंचा,

ब्रिटिश साम्राज्य को आघात।।

भारतीयों में स्वाभिमान जगाने

मध्यम वर्ग ने किया प्रयास।

इससे जन मानस में हुआ।

राष्ट्रीयता की भावना का विकास।।

राष्ट्रीयता की भावना से

एक दूसरे के करीब आये।

कलकत्ता बंबई व मद्रास में

गठित किये राजनीतिक संस्थायें।।

संगठनों के विकास से

दिखाई पड़ी राजनीतिक जागृति।

बुनियादी मांगो पर

संगठन ने दी स्वीकृति।।

लोगों को जागृत किये

विरोध में सभायें कर।

नये संगठन थे

पहले की अपेक्षा अधिक प्रखर।।

कांग्रेस के प्रारंभिक नेता

जिस विचारधारा से आये।

भारतीय इतिहास में

नरमपंथी कहलाये।।

नरमपंथी नेताओं को

ब्रिटिश शासन से थी आस।

विरोध किये बिना

देश की प्रगति का किया प्रयास।

कांग्रेस की लोकप्रियता से

अंग्रेज अधिकारियों में फैली घबराहट।

पैदा करना शुरू किया

कांग्रेस अधिवेशनों में रूकावट।।

कांग्रेस करती रही

सब विरोधों का सामना।

युवा वर्ग में बढ़ती गई

देश प्रेम की भावना।।

देश प्रेम की भावना जगाई।

दिखाकर अंग्रेजी शोषण का चित्र।

समाचार पत्र माध्यम बना

जो थे हिन्द केसरी व छत्तीसगढ़ मित्र।।

कांग्रेस ने प्रतिवर्ष,

अधिवेशन कराया।

जिससे लोगों में

राष्ट्रीयता की भावना आया।।

प्रार्थना पत्र व निवेदन

मांग रखने के थे साधन।

उनका विश्वास था

सरकार पर आस्था के कारण।।

सरकार ने नहीं दिया

उनकी मांगों पर कोई ध्यान।

समय के साथ नेताओं को

हुआ अब यह ज्ञान।।

भारत का बंगाल प्रांत

राष्ट्रीयता का था गढ़।

लोगों ने भाग लिया

आंदोलन में बढ़ चढ़।।

बंगाल का विभाजन कर

वायसराय कर्जन ने दिया धोखा।

प्रशासनिक सुविधा के नाम पर

राष्ट्रवाद की भावना को रोका।।

बंगाल का विभाजन कर

पूर्वी बंगाल का किया निर्माण।

जिससे अलग हो गये

हिन्दू और मुसलमान।।

विभाजन से जनमत

उग्र हुये अत्यंत।

लोगों का ध्येय बना

ब्रिटिश शासन का अंत।।

विभाजन पर लोगों ने

शोक दिवस मनाया।

ब्रिटिश माल का बहिष्कार कर

वंदेमातरम का नारा लगाया।।

राष्ट्रीयता के उत्थान में

बंग विभाजन घटना थी बड़ी।

युक्ति सगत नहीं होने से

1911 में इसे रद्द करना पड़ा।

1906 के कलकत्ता अधिवेशन में

कांग्रेस ने बहुमत से किया स्वीकार।

स्वराज्य, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा

और विदेशी माल का बहिष्कार।।

अधिवेशन में स्वीकृत कार्यक्रम से

चिंतित हुई अंग्रेजी सत्ता।

दादाभाई नौरोजी ने की

इस अधिवेशन की अध्यक्षता।।

कांग्रेस के आरंभिक नेताओं ने

लोगों को किया एकजुट।

1907 के सूरत अधिवेशन में

कांग्रेस में पड़ गई फूट।।

कांग्रेस के ऐसे नेता

जो अनुनय विनय पर देते थे बल।

1907 के बाद

कहलाये नरम दल।।

नरम दल के नेता

मांगों के लिये देते थे अर्जी।

इसके प्रमुख नेता थे

गोपाल कृष्ण, फिरोजशाह और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में

सूरत अधिवेशन के बाद।

उन नेताओं का महत्व बढ़ा

जिन्होंने अपनाया उग्र राष्ट्रवाद।।

अनुनय विनय पर

इनका नहीं था विश्वास।

अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने

किया निरंतर प्रयास।।

देश प्रेम व आत्मबल

जनता में जगाये।

अपनी नीतियों से

गरमदल कहलाये।।

लोगों को जागरूक किये

कुर्बानी की भावना डाल।

गरम दल के नेता थे

लाल बाल और पाल।।

बाल गंगाधर तिलक ने

दिया लोकप्रिय नारा।

स्वराज्य है,

जन्म सिध्द अधिकार हमारा।।

तिलक के आह्वान ने

अंग्रेजों को किया भयभीत।

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने रचा

प्रसिध्द वंदेमातरम गीत।।

लोगों को एक जुट किया

देश प्रेम का भावना डाल।

अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह हुआ

1910 में बस्तर में भूमकाल।।

राजनैतिक जागरण के लिये

गणेश व शिवाजी उत्सव आरंभ कराये।

स्वदेशी प्रेम बढ़ाने

वस्तु बहिष्कार आंदोलन चलाये।।

राजनैतिक जागरण लाने में

अतुल्य है तिलक का योगदान।

केसरी और मराठा पत्रों ने

लोगों का किया आह्वान

छत्तीसगढ़ में नेता रहे

सुंदरलाल शर्मा व नारायण राव मेघावाले।

खादी आश्रम की स्थापना कर

स्वदेशी आंदोलन पर प्रभाव डाले।।

ऐसे नौजवान

जो थे समर्पित व उत्साही।

अंग्रेजों के विरुध्द

करते थे सीधी कार्यवाही।।

अंग्रेजों को बाहर खदेड़ने

तरकीब अपनाये सारी।

हथियार चलाने का प्रशिक्षण ले

कहलाये क्रांतिकारी।।

ये जोशीले नौजवान थे

सक्रिय संघर्ष के पक्षधर।

अंग्रेजों को भयभीत किये

गोला बारूद का प्रयोग कर।।

महाराष्ट्र में अभिनव भारत

बंगाल में अनुशीलन समिति था शक्तिशाली।

पंजाब और उत्तर भारत में भी

क्रांतिकारी संगठनों में व्यापक प्रभाव डाली।।

क्रांतिकारी नौजवान

देश प्रेम से थे ओत प्रोत।

इनका आत्मबलिदान

देश के लिये बना प्रेरणा स्त्रोत।।

क्रांतिकारी नौजवानों ने

विदेशों में भी दिखाये जोश।

इनमें प्रमुख थे

श्यामजी, भीकाजी और रास बिहारी बोस।।

आंशिक रूप से सफल रहा

क्रांतिकारियों के काम।

क्रांतिकारियों में शामिल था

बी.डी. सावरकर का नाम।।

मुसलमान नौजवानों ने भी

अपना दिखाया उत्साह।

प्रमुख क्रांतिकारी थे

ओबेदुल्ला और बरकत उल्लाह।।

अंग्रेजी नीतियो से

हिन्दू मुसलमान में बढ़ी प्रीति।

तब अंग्रेजों ने अपनाई

फूट डालों और राज करो की नीति।।

अलग संगठन बनाने

मुसलमानों को प्रोत्साहित किया।

सलीमउल्ला खां के नेतृत्व में

संगठन को मुस्लिम लीग नाम दिया।

प्रारंभ में मुस्लिम लीग ने

सत्ता के प्रति निष्ठा दिखाई।

बाद में अंग्रेजों की

दोहरी नीति समझ में आई।।

लखनऊ समझौते के बाद

अंग्रेजों के विरुध्द संघर्ष किये।

1920 के असहयोग आंदोलन में

दोनों ने मिलकर भाग लिये।।

छत्तीसगढ़ के नेता भी

नरम व गरमदल के प्रभाव में आया।

वंदेमातरम का नारा देकर

स्वदेशी का महत्व समझाया।।

1911 के आते-आते

मजबूत हुई अंग्रेजी सत्ता।

दिल्ली को राजधानी बनाये

जो थी पहले कलकत्ता।।

विदेशों में सक्रिय रहे

जो भारतीय युवा छात्र।

सशस्त्र क्रांति को मानते थे

आजादी का एक रास्ता मात्र।।

ऐसे ही विचार वाले युवा

उत्तर अमेरिका में थे सक्रिय।

1913 में गदर पार्टी बनाकर

लाला हरदयाल बने लोकप्रिय।

सक्रियता के कारण देश से

इन्हें निश्कासित होना पड़ा।

विश्व युध्द के सिपाहियों के बीच

सशस्त्र क्रांति का प्रभाव बढ़ा।।

साम्राज्यवादी नीतियों से

यूरोपीय देशों में बढ़ी दुशमनी।

दो विरोधी गुटो का बनना

1914 के प्रथम विश्व युध्द का कारण बनी।

वस्तुओं के दाम बढ़े

जन विरोधी नीतियों के कारण

सरकार ने उपयोग किया

भारतीय सिपाही व साधन।।

सरकार ने नागरिकों पर

लगा दिये प्रतिबंध अनेक।

असंतोष बढ़ने से

भारतीय होने लगे एक।।

डा. श्रीमती एनीबेसेंट

आयरलैण्ड से भारत आई।

होमरूल आंदोलन आरंभ कर

इस समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।।

होमरूल का अर्थ

एनीबेसेंट ने यह माना।

भारतीयों का होगा अधिकार

शासन को स्वयं चलाना।।

एनीबेसेंट के प्रयास से

प्रभावित हुआ जन समाज।

आंतरिक क्षेत्र में शासन का

अब आधार बना स्वराज।।

होमरूल आंदोलन ने

तिलक व बेसेंट को करीब लाया।

देश में सघन दौरा कर

स्वराज को लोगों तक पहुंचाया।।

युध्द जन्य परिस्थितियों से

भारत में फैली असंतोष की आग।

सरकार ने भारतीयों को

सौंपे महत्वहीन विभाग।।

इस नियम से मध्यप्रांत में

विधान परिषद का हुआ चुनाव।

चुने गये नेताओं में थे

रविशंकर, शिवदास व राघवेन्द्र राव।।

सन् 1920 के करीब

बहने लगी आंदोलन की आंधी।

राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया

जब महात्मा गांधी।।

गांधीजी के नेतृत्व से

सरकार को पहुंचा आघात।

इससे स्वाधीनता संघर्ष में

हुई एक नये अध्याय की शुरूआत।।

2 अक्टूबर 1869 को

गुजरात के पोरबंदर में जन्म लिया।

मोहनदास करमचंद गांधी को

लोगों ने महात्मागांधी का नाम दिया।

अंग्रेज भारतीयों के साथ

करते थे रंगभेदी व्यवहार।

गांधीजी के सत्याग्रह से

झुक गया अंग्रेजी सरकार।।

सत्याग्रह का अर्थ है

सत्य के प्रति समर्पित मन।

अहिंसात्मक तरीके से लड़ने

शोषण के विरुध्द मिला समर्थन।।

अंग्रेज शासकों के विरुध्द संघर्श करने

गांधी जी गये जब दक्षिण अफ्रीका।

शोशण के विरुध्द संघर्श करने,

सत्याग्रह का व्यावहारिक प्रयोग सीखा।।

असहयोग और अवज्ञा

सत्याग्रह के थे अंग।

संपूर्ण भारत का भ्रमण कर,

किसानों मजदूरों व दलितों को लिया संग।।

लोगों की छोटी छोटी

समस्याओं को करने हल।

गांधी जी ने सदैव

सत्याग्रह पर दिया बल।।

सरकारी नीतियों के विरुध्द।

लोग अब आगे बढ़े।

गांधीजी के नेतृत्व में

आंदोलन के लिये निकल पड़े।।

बिहार के चम्पारण में

जो कृषक परिवार रहते।

अंग्रेज सरकार उनको

नील की खेती करने बाध्य करते।।

प्रमुख व्यावसायिक फसलें थी

अफीम, नील और जूट।

इनकी खेती बढ़ाकर

शुरू किया किसानों की लूट।।

किसानों को विवश किये

करने व्यावसायिक फसलों का उत्पादन।

किसानों के लिये अनुपयोगी रहा

जो महत्वहीनता के कारण।।

नशे के लिये करते

अफीम का इस्तेमाल।

इससे अंग्रेजी सरकार को

मुनाफा होता हर साल।।

अफीम का सबसे बड़ा

बाजार था चीन।

जहां के अधिकांश लोग

रहते थे नशे में लीन।।

नील का इस्तेमाल कर,

रंगा जाता था कपड़ा।

रस्सी, बोरे, थैला बनाने में

जूट था उपयोगी बड़ा।।

किसानों की समस्याओं पर,

गांधीजी ने ध्यान दिया।

अत्याचारों से मुक्त कराने,

चम्पारण जाकर सत्याग्रह किया।।

किसानों के शोषण रोकने,

गांधीजी थे कटिबध्द।

आखिर में सरकार ने

इस प्रथा को किया रद्द।।

इसी समय खेड़ा में

पड़ा भयंकर अकाल।

प्लेग फैलने से भी

लोगों का हुआ बुरा हाल।।

अकाल और प्लेग से

किसान थे परेशान।

असंभव सा हो गया

सरकार को देना लगान।।

किसानों के पक्ष में खेड़ा में

गांधी जी ने प्रयास किया काफी।

अंततः किसानों को

मिल गया लगान माफी।।

रूद्री व माडम सिल्ली में

अंग्रेजों ने बांध बनाया।

बांध से नहर निकाल,

नहर कर लगाया।।

नहर कर की राशि

किसानों के लिये थी भारी।

दस वर्षीय अनुबंध से

कर वसूले अंग्रेज अधिकारी।।

अनुबंध के लिये

किसान नहीं थे तैयार।

कर लेने अंग्रेज

जबरदस्ती करते बार बार।।

अंग्रेजों का यह कार्य

किसानों को नहीं भाया।

किसानों को अपमानित करने

पानी चोरी का आरोप लगाया।

नहर कर के विरोध में

खड़े हुये सभी खास और आम।

सत्याग्रह का मिसाल बना

धमतरी जिले का कंडेल ग्राम।।

कर नहीं देने पर अंग्रेज

पशुओं को ले गये बाजार।

सुंदरलाल शर्मा, नारायण राव,

बने आंदोलन के सूत्रधार।।

गांधी जी से आंदोलन के

नेतृत्व करने का आग्रह किये।

नागपुर अधिवेशन के समय

कंडेल ग्राम आने का समय दिये।।

किसान की दृढ़ता से

सत्य के लिये लड़े।

संपूर्ण कार्यवाही रद्द कर

अंग्रेजों को मवेशी छोड़ने पड़े।।

सत्याग्रह के मार्ग से,

सफलता हुई प्राप्त।

गांधी जी के आगमन पूर्व ही

कंडेल आंदोलन हो गया समाप्त।।

गांधी जी के धमतरी प्रवास में

उमड़ पड़ा जन समूह अपार।

राजनीति हलचल बढ़ने से

राष्ट्रीय आंदोलन की बढ़ी धार।।

गांधी जी ने छत्तीसगढ़ में,

उत्साहवर्धन किया।

स्वतंत्रता आंदोलन के आगे बढ़ाने

जनता को मार्गदर्शन दिया।।

धमतरी के मढ़ई चैक में

गांधी जी को देना था भाषण।

मंच तक पहुंचने में असमर्थ हुये,

अपार समूह के कारण।।

गुरूर गांव का व्यापारी

उमर सेठ वहां आया।

अपने कंधों पर बैठाकर

गांधीजी को मंच पर पहुंचाया।

वापस लौटकर रायपुर में,

सभा को संबोधित किया।

युवकों व महिलाओं को

आंदोलन से जुड़ने प्रेरणा दिया।

लगातार मंहगाई बढ़ने से,

परेशान थे मिल मजदूर।

अहमदाबाद में आंदोलन किये

होकर के मजबूर।।

मिल मजदूरों का आंदोलन,

नहीं गया बेकार।

गांधी जी के समर्थन से

मिल मालिकों की हुई हार।।

गांधी जी के समर्थन मे

मजदूरों ने लड़ी लड़ाई।

आंदोलन के अंत में

वेतन वृध्दि व बोनस पाई।।

1908 में तिलक की गिरफ्तारी से

मजदूरों में आई राष्ट्रीय जागृति।

1917 की रूसी क्रांति

सर्वहारा सफलता की बनी कृति।।

रूसी क्रांति के बाद

मजदूर चेतना ने ली अंगड़ाई।

भारत के मजदूरों ने

अपनी अपनी संगठन बनाई।।

राजनांदगांव में काटन मिल के

मजदूरों ने किया हड़ताल।

इसका नेतृत्व किया

छत्तसीगढ़ के ठाकुर प्यारे लाल।।

संपूर्ण भारत जब

आंदोलन के प्रभाव में आया।

नियंत्रण करने सरकार ने

1919 में रोलेट एक्ट बनाया।।

इस कानून ने भारतीयों की,

आजादी पर किया प्रहार।

बिना मुकदमा चलाये

बंदी बना सकती था सरकार।।

1919 के रोलेक्ट एक्ट ने

सभी भारतीयों पर प्रभाव डाला।

मूल अधिकारों पर चोट से

कहलाया कानून काला।।

कुख्यात एक्ट के विरूद्ध

फैली विरोध की लहर।

जन जन आक्रोशित हुये

क्या गांव, क्या शहर।।

रोलेट एक्ट कुख्यात हुआ,

दमनकारी नियमों के कारण।

एक्ट के विरुध्द आंदोलन ने

पंजाब में किया उग्र रूप धारण।।

आंदोलन कुचलने सरकार ने,

चली दमन की चाल।

गिरफ्तार हुये नेताओं में थे

सैफुद्दीन किचलू और सत्यपाल।।

गिरफ्तारी की खबर फैली

जैसे जंगल की हो आग।

सभा के लिये निश्चित हुआ,

अमृतसर के जलिया वाला बाग।।

इस बाग के तीन ओर

थी ऊंची ऊंची दीवार।

एकमात्र छोटी गली से

लोग जाते थे उस पार।।

13 अप्रैल 1919 की सभा में

काफी लोग इकट्ठे हुये यहां।

विरोध प्रदर्शित करने पहुंचे,

पुरुष, महिला और बच्चे वहां।।

एक ब्रिटिश अधिकारी,

जो था बहुत कायर।

भीड़ पर गोली चलाने वाला

वह था जनरल डायर।।

अचानक हुई गोली बारी से

हतप्रभ थे लोग सारे।

जनरल डायर के आदेश से

सैकड़ों लोग गये मारे।।

इस घटना ने तीव्र किया

राष्ट्रीय आंदोलन की धार।

जिस दिन घटित हुआ,

उस दिन था बैसाखी का त्यौहार।।

जनरल डायर का कृत्य

था बड़ा संहारक।

जलियावाला बाग है

एक राष्ट्रीय स्मारक।।

दीवारों पर आज भी है,

गोलियों के निशान।

जो सदैव बनी रहेगी

जलियावाला बाग की पहचान।।

जघन्य हत्याकांड से,

संपूर्ण भारत में फैला क्रोध।

जगह-जगह सभायें कर

लोगों ने प्रगट किया विरोध।।

रवीन्द्र नाथ टेगोर ने,

सर की उपाधि त्यागी।

मध्यवर्गीय राष्ट्रवाद,

अब जन-जन में जागी।।

जलियावाला बाग हत्याकांड से

खत्म हो गई अंग्रेजों की शराफत।

भारत के मुसलमानों ने,

शुरू किया आंदोलन खिलाफत।।

तुर्किस्तान के सुल्तान,

मुसलमानों के थे धर्म गुरू।

खलीफा का पद स्थापित करने

खिलाफत आंदोलन किये शुरू।।

खलीफा का पद समाप्त किये,

विश्व युध्द के बाद।

तुर्की से समझौता कर

कठोर शर्तें दी गई लाद।।

गांधीजी ने सोचा,

यह है अनुकूल अवसर।

राष्ट्रीय आंदोलन सशक्त होगी,

जब लड़े हिन्दु मुस्लिम एक रहकर।।

खिलाफत आंदोलन को मिला,

गांधी जी का समर्थन।

अंग्रेजों से लड़ने,

एक हुये हिन्दू मुस्लिम का मन।।

1920 में गांधी जी ने

असहयोग आंदोलन आरंभ किया।

खिलाफत में समर्थन से,

मुसलमानों ने गांधीजी को सहयोग दिया।।

असहयोग आंदोलन से लोगों ने,

स्वदेशी का संकल्प लिया।

राष्ट्रवादियों ने स्थापित की,

राष्ट्रीय शिक्षा के लिये जामिया मिलिया।।

वाराणसी में दी जिसने,

राष्ट्रीय शिक्षा की सीख।

आज भी प्रसिध्द है,

वह काशी विद्यापीठ।।

विदेशी वस्तु व संस्थाओं का,

करके बहिष्कार।

स्वदेशी उपयोग का

खूब किया गया प्रचार।।

जनता के समर्थन से

फैला स्वदेशी का प्रभाव।

छत्तीसगढ़ में भी यह आंदोलन,

पहुंचा गांव-गांव।।

स्वदेशी का बढ़ता प्रभाव,

अंग्रेजों को नहीं आया रास।

आंदोलन को कुचलने

किया गया बर्बर, प्रयास।।

रेल वैगनों में ठूंसकर,

ले जाया गया दूसरे स्थान।

जिससे भड़क उठे,

केरल के मोपला किसान।।

किसान आंदोलन के लिये

प्रसिध्द है गुजरात का बारदोली।

जगह-जगह आंदोलन से,

अंग्रेजों की सत्ता डोली।।

अहिंसक आंदोलन पर,

गांधी जी ने दिया जोर।

अंग्रेजों का दमन चक्र,

दबा देते थे लोगों का शोर।।

5 फरवरी 1922 को चौरी-चौरा में

पुलिस से हो गई बहस।

क्रुध्द भीड़ की कार्यवाही से

शांतिपूर्ण आंदोलन हो गई तहस-नहस।।

पुलिस चौकी में आग लगाने से

जलकर मर गये कई सिपाही।

जिम्मेदार लोगों के विरुध्द

शासन ने की सख्त कार्यवाही।।

चौरी-चौरा की घटना से

गांधी जी हुये अत्यंत द्रवित।

12 फरवरी 1922 को

आंदोलन कर दिया स्थगित।।

आंदोलन वापस लेने से

वरिष्ठ नेता हुये निराश।

जिनमें सर्व प्रमुख थे,

मोतीलाल नेहरू व चितरंजन दास।।

चुनाव लड़कर सरकारी कार्यों में,

बाधा डालने पर दिया बल।

कांग्रेस के इन नेताओं ने

बनाया एक स्वतंत्र स्वराज दल।।

1923 के चुनाव में

बड़ी संख्या में जीतकर आये।

केन्द्रीय व प्रांतीय सरकार के

दमन नीति को सामने लाये।।

कांग्रेस के इस गुट का,

प्रयोग रहा कारगर।

1919 के अधिनियम की

कमिया भी हुई उजागर।।

राष्ट्रीय आंदोलन में नौजवानों ने

निभाई जिम्मेदारी।

हिंसात्मक संघर्ष के कारण

कहलाये क्रांतिकारी।।

आंदोलन वापस लेने से

मन में उत्पन्न हुआ अवसाद।

प्रमुख क्रांतिकारी नेता थे

सचिन्द्रनाथ, योगेशेचन्द्र व रामप्रसाद।।

क्रांतिकारियों ने सरकार के लिये

स्थिति उत्पन्न की विकट।

रेल रोककर खजाना लूटा

काकौरी में लखनऊ के निकट।।

सार्जेंट सैण्डर्स की हत्या में

लाहौर में रहे जो रत।

उनमें प्रमुख क्रांतिकारी थे,

भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त।।

सैण्डर्स ने लाला लाजपत राय पर

लाठिया बरसाई।

भगत सिंह व बटुकेश्वर के हाथ

अपने कृत्य की सजा पाई।।

केन्द्रीय सभा से पारित कानून में

अंग्रेजो की क्रूरता देख।

भगत सिंह ने विरोध प्रकट किया

विधान सभा में बम फेंक।।

बम फेंक कर भगत सिंह अपनी बात

लाना चाहा जनता के आगे।

इसलिये वहीं खड़े रहे

बम फेंककर नहीं भागे।।

बम कांड में अंग्रेजों ने

गिरफ्तारी की शुरू।

गिरफ्तार होने वालों में थे

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू।।

गिरफ्तारी के बाद तीनों पर

सैण्डर्स हत्या का आरोप लगाया।

मुकदमा की कार्यवाही पूरी कर

23 मार्च 1931 में फांसी पर चढ़ाया।।

इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में

शहीद हुआ चन्द्रशेखर आजाद।

क्रांतिकारी आंदोलन समाप्त हुआ

इस घटना के बाद।।

आंदोलन में नौजवान नेताओं ने

इस अवधि के मध्य।

समाजवादी विचारों को,

अपना बनाया लक्ष्य।।

समाजवादी विचार व रूसी क्रांति ने

युवा नेताओं में भरा जोश।

इनमें प्रमुख नेता थे

पंडित नेहरू व सुभाश चन्द्र बोस।।

समाजवादी विचारों के प्रसार में

पं. नेहरू ने दिखाई तत्परता।

जनता के संघर्ष को

आंदोलन का अंग बनाने में की सहायता।

सुभाश चन्द्र बोस ने

सिविल सर्विस की नौकरी छोड़ा।

विद्यार्थियों और जवानों को

आजादी के संघर्ष में जोड़ा।।

1930-40 के बीच भारत में

नेहरू व बोस की रही सक्रियता।

चाचा नेहरू व नेताजी के रूप में

मिली अपार लोकप्रियता।।

पूर्ण स्वराज की प्राप्ति

कांग्रेस ने लक्ष्य बनाई।

1929 के लाहौर अधिवेशन में

निरंतर संघर्ष की शपथ दिलाई।।

संघर्ष की शपथ से

मन में उत्साह आया।

26 जनवरी 1930 को

देश ने प्रतिज्ञा दिवस मनाया।

सर्वत्र उत्साह के बाद

जनता जुड़ने लगी अपने आप।

आंदोलन का वातावरण बना,

अंग्रेजी शासन के खिलाफ।।

नमक बनाने पर था,

सरकार का एकाधिकार।

नमक बनाकर गांधी जी ने

किया इस कानून का प्रतिकार।।

गांधी जी 78 कार्यकर्ताओं के साथ

समुद्र की ओर किये प्रस्थान।

साबरमती आश्रम से चलकर

पहुंचे दांडी नामक स्थान।।

6 अप्रैल 1930 को

अपने सभी साथियों के संग।

समुद्र तट में नमक बनाकर

किया उन्होंने कानून भंग।।

नमक बनाकर गांधी जी ने

तोड़ा एकाधिकार का दंभ।

इसके साथ ही देशभर में

अवज्ञा आंदोलन हुआ आरंभ।।

उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में

संगठन बनाया खुदा-ई-खिदमतगार।

पेशावर में नेतृत्व किया

खान अब्दुल गफ्फार।।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में

इस आंदोलन का पड़ा प्रभाव।

शासकीय भवनों पर

तिरंगा फहराने का पारित हुआ प्रस्ताव।।

कर न हो पट्टा मत लो

छत्तीसगढ़ का बना पहचान।

जंगल सत्याग्रह ने भी,

अवज्ञा आंदोलन में पाया स्थान।।

जंगलों पर होता था,

आदिवासियों का पुश्तैनी अधिकार।

जंगल के उपयोग पर प्रतिबंध लगाकर

ब्रिटिश शासन ने किया प्रहार।।

जंगल पर प्रतिबंध ने

ग्रामीणों की जीवन पर प्रभाव डाला।

जिससे यह आंदोलन बना

सर्वाधिक अवधि तक चलने वाला।

जंगल सत्याग्रह का रहा

जहां जबरदस्त प्रभाव।

उनमें प्रमुख रूप से सम्मिलित था

मोहबना पोंड़ी और रूद्री नवागांव।।

अलग-अलग ढंग से लोग,

अपने को आंदोलन से जोड़े।

शासन के विरोध में,

जंगल कानून तोड़े।।

झण्डा, बहिष्कार व राजबंदी दिवस

जंगल सत्याग्रह का प्रतीक बना।

6 से 13 अप्रैल तक

सभी जगह राष्ट्रीय सप्ताह मना।।

व्दितीय अवज्ञा आंदोलन के

वस्तु बहिष्कार था मुख्य कार्यक्रम।

पं. रविशंकर शुक्ल के प्रयास से

स्थापित किये गये सत्याग्रह आश्रम।।

1935 के अधिनियम के बाद

1937 में चुनाव कराये।

देश भर के विधान मंडलों में

कांग्रेसी जीतकर आये।।

कांग्रेसी सरकार ने जनकल्याण के

कई काम किये।

विश्वयुध्द में अंग्रेजों ने

भारत को युध्द में उतार दिये।।

विश्वयुध्द में भाग लेने का,

अंग्रेजों का एक तरफा था निर्णय।

विरोध स्वरूप कांग्रेसियों ने

सरकार छोड़ने का किया निश्चय।।

कांग्रेस के नेताओं ने

गांधीजी से किया गुहार।

पहले से व्यापक आंदोलन

आरंभ किया जाये इस बार।।

युवकों को एक करने

सुभाशचन्द्र बोस ने किया जतन।

फारवर्ड ब्लाक के नाम से

बनाया एक संगठन।

अतिशीघ्र प्रसिध्द हुआ

आजाद हिंद फौज का नाम।

त्वरित कार्यवाही करना

हुआ जिसका काम।।

बोस के आह्वान पर

एक हुआ देश सारा।

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी,

का दिया प्रसिध्द नारा।।

छत्तीसगढ़ में भी युवको ने

किया साहसिक काम।

बम व रिवाल्वर बनाना सीखा

सूरबंधु, मंगलमिस्त्री व परसराम।।

क्रांतिकारियों के संबंध में,

मुखबिर ने दिया संदेश।

इतिहास में प्रसिध्द है

यह रायपुर षडयंत्र केस।।

कठोरता एवं बर्बरता से

सरकार ने बनाया दबाव।

बंबई के विशेष अधिवेशन में

पारित हुआ भारत छोड़ो का प्रस्ताव।।

8 अगस्त 1942 को पारित

इस प्रस्ताव के व्दारा।

गांधीजी ने दिया देश को

करो या मरो का नारा।।

व्यापक स्तर पर आंदोलन कर

लिया गया निर्णय।

व्दितीय विश्वयुध्द के बाद

सरकार का नहीं रहा भय।।

अंग्रेज सरकार ने सिफारिश की

कुछ संवैधानिक सुधार।

भारतीय नेताओं ने जिसे

कर दिया अस्वीकार।।

परिस्थिति से निपटने

वायसराय ने समझा निश्चित।

कांग्रेस और लीग के नेताओं से

आरंभ करना होगा बातचीत।।

कार्यकारी परिषद में

मुहम्मद अली जिन्ना के अनुसार।

मुस्लिम प्रतिनिधि की नियुक्ति का

लीग को मिले पूर्ण अधिकार।।

मुस्लिम लीग की मांग को

मिला सरकार का साथ।

कांग्रेस के नेताओं ने

मान्य नहीं की यह बात।।

मार्च 1946 के आते आते

यह लगने लगा जरूर।

भारत की स्वतंत्रता

अब नहीं है ज्यादा दूर।।

उत्पन्न परिस्थिति से

सरकार ने यह जाना।

कांग्रेस और लीग के मध्य

वार्ता आवश्यक माना।।

1946 के प्रांतीय चुनाव में

कांग्रेस को मिला जनता का साथ।

अंतरिम सरकार के गठन से

शासन आया नेहरू के हाथ।।

नेहरू व्दारा सरकार गठन

मुस्लिम लीग को नहीं भाया।

इसके विरोध में

सीधी कार्यवाही दिवस मनाया।।

सीधी कार्यवाही दिवस का

दुःखद रहा परिणाम।

हिन्दू मुस्लिम दोनों का

हुआ कत्लेआम।।

परिणाम स्वरूप सरकार ने

पुनः वार्ता का समय किया तय।

जून 1948 तक

भारत छोड़ने का लिया निर्णय।।

इंग्लैंड की संसद ने

स्वाधीनता अधिनियम पारित किया।

लार्ड माउंट बेटन भारत आया,

पूर्ण करने संवैधानिक प्रक्रिया।।

सबसे पहले जो किया गया

माउंट बेटन के आने के बाद।

सुलझाने का प्रयास हुआ

कांग्रेस लीग के मध्य विवाद।।

बहुत प्रयास के बाद भी

दोनों में नहीं बनी सहमति।

मतभेदों के कारण,

देश में बढ़ी दंगों की गति।।

तनावों के कारण देश का

विभाजन हो गया अनिवार्य।

दोनों के बीच रेखा खींचने

सीमा आयोग ने शुरू किया कार्य।।

मुस्लिम बहुल क्षेत्र

भारत के नक्शे से कटा।

भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के तहत्

भारत दो स्वतंत्र देशों में बंटा।।

भारत का विभाजन होना

राजनैतिक दलों की थी नैतिक हार।

1947 में पाकिस्तान को

अलग राष्ट्र के रूप में किया स्वीकार।।

14 अगस्त को पाकिस्तान का

15 अगस्त को हमारा स्वतंतत्रता दिवस है आता।

भारत का राष्ट्रीय आंदोलन

अनवरत संघर्ष की है गाथा।।

भारतीय गणतंत्र की स्थापना

अंग्रेजों ने यह समझ लिया,

व्दितीय विश्व युद्ध के बाद।

अब नहीं चलेगा,

भारत में उसका राज।।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने

1946 में की यह घोशणा।

शीघ्र ही अंग्रेज,

चाहते हैं भारत छोड़ना।।

सत्ता हस्तांतरण के संबंध में,

भारतीय नेताओं से किया विचार।

कैबिनेट मिशन भारत भेजा,

बनाने अंतरिम सरकार।।

कैबिनेट मिशन ने रखा

संविधान सभा गठन का प्रस्ताव।

प्रांतीय विधान सभा द्वारा

सदस्यों का किया गया चुनाव।।

चुनाव और मनोनयन

संविधान सभा के गठन की बनी रीत।

प्रांतों के सदस्य चुनाव से

रियासतों के हुये राजाअें द्वारा मनोनित।

1946 में लार्ड वेबेल

वायसराय बनकर आया।

पं. नेहरू के नेतृत्व में

अंतरिम सरकार बनाया।।

डा. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में

संविधान सभा का गठन किया।

मुस्लिम लीग तथा राजाओं ने

उसमें भाग नहीं लिया।।

1946 के अंतरिम सरकार में

लीग ने नहीं लिया स्थान।

मुस्लिम लीग ने मांग की

अब पृथक पाकिस्तान।।

कांग्रेस ने अस्वीकृत की,

पृथक पाकिस्तान की बात।

मुस्लिम लीग अड़ गई,

छोड़ने कांग्रेस का साथ।।

पृथक पाकिस्तान पर लीग ने

अत्यधिक जोर दिया।

अंतरिम सरकार में शामिल हो

बाधा डालने का कार्य किया।।

जब अस्वीकृत हो गई

पृथक पाकिस्तान की मांग।

सीधी कार्यवाही की घोशणा कर

फैलाया सांप्रदायिक दंगे की आग।।

सीधी कार्यवाही से प्रभावित हुआ

बंगाल बिहार व बंबई।

हिन्दू मुस्लिम दंगो से

भयंकर मारकाट मच गई।।

अंग्रेजों ने दंगा रोकने

नहीं दिया कोई ध्यान।

कुछ महीनों के भीतर

लाखों लोगों को हुआ नुकसान।।

जनता के मध्य स्थापित

भाई चारा के बाद।

छत्तीसगढ़ में नहीं हुआ,

किसी प्रकार का दंगा फसाद।।

सांप्रदायिक दंगों से गांधी जी

हुये बहुत संतप्त।

उन क्षेत्रों का दौरा किया

जो थे दंगाग्रस्त।।

मार्च 1947 में माउंट बेटन

भारत का बना वायसराय।

विभाजन की बात रखी

जिसका आधार बना सम्प्रदाय।।

बेटन के अनुसार विभाजन

रास्ता था एक मात्र।

भारत और पाकिस्तान बना

दो स्वतंत्र राष्ट्र।।

कांग्रेस चाहती थी

भारत की एकता और अखंडता।

दंगों का अंत करने

मानी पाकिस्तान की स्वतंत्रता।।

पश्चिम पंजाब, पूर्वी बंगाल,

सिंध और पश्चिमोत्तर का स्थान।

पृथक होकर बना

नया राष्ट्र पाकिस्तान।।

भारतीयों के लिये दुखद थी

अखंड भारत का विभाजन।

अविश्वास का माहौल बना

हिन्दू मुस्लिम दंगों के कारण।।

पंजाब और बंगाल में

दंगे हुये सबसे ज्यादा।

दंगे उत्पन्न करती है

राष्ट्र विकास में बाधा।।

सभी धर्म के लोगों को

चाहिये मिलजुलकर रहना।

मतभेदों को शांति से

सीखना होगा हल करना।।

भारत विभाजन का हुआ,

नकारात्मक आर्थिक प्रभाव।

कुछ दिनों तक भारत में

अन्न का रहा अभाव।।

अधिकांश कारखाने बंद हुये

विभाजन के कारण।

वे क्षेत्र यहां नहीं रहे

जो करते थे जूट व कपास उत्पादन।।

वे क्षेत्र भी चले गये

जहां होता था गेहूं का उत्पादन।

अन्न की समस्या हुई

नहीं होने से सिंचाई के साधन।।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम बना,

भारत विभाजन का आधार।

15 अगस्त 1947 के बाद

इंग्लैण्ड का नहीं रहा कोई अधिकार।।

संघर्ष और प्रतीक्षा के बाद,

15 अगस्त की सुबह वह दिन आया।

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने

लाल किले से तिरंगा झंडा फहराया।।

संविधान सभा भारत की,

संसद के रूप में काम करने लगी।

जीवन और स्वतंत्रता की

भारत में नई उम्मीद जगी।।

स्वतंत्रता के पश्चात्

तिरंगा बना पहचान।

इसके साथ ही शुरू हुआ

नये भारत का निर्माण।।

छत्तीसगढ़ नहीं रहा

खुशी के इस पल से दूर।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस का

गवाह बना रायपुर।।

खाद्य मंत्री आर. के पाठिल ने

तिरंगा झंडा फहराया।

छत्तीसगढ़ वासियों में

नवजीवन का उत्साह आया।।

स्वतंत्र भारत के सामने

कई थी तात्कालिक समस्यायें।

प्रथम कार्य था,

कैसे राजनीतिक एकता बनायें।।

1947 के पूर्व अंग्रेजों ने

जिस तरह, की सियासत।

सीधे शासित प्रांतों के अलावा

550 से ज्यादा थी स्वतंत्र रियासत।।

1947 में पारित

स्वतंत्रता अधिनियम के अनुसार।

देशी रियासतों को मिला

स्वतंत्र रहने का अधिकार।।

ब्रिटीश सरकार ने जब,

प्रस्तुत की माउंट बेटन योजना।

भारत की स्वतंत्रता के साथ

रियासतों के स्वतंत्रता की थी घोषणा।।

देशी रियासत जायेंगे,

भारत या पाकिस्तान के साथ।

यह निर्भर रहा

देशी राजाओं के हाथ।।

रियासतों का स्वतंत्र रहना

एकता व सुरक्षा के लिये था आघात।

रिसायतों का विलय कराने

सरदार पटेल ने की चर्चा की शुरूआत।।

पटेल ने विलय हेतु,

देशी राजाओं को समझाया।

छत्तीसगढ़ में यह कार्य करने

दिसंबर 1947 में नागपुर भी आया।।

562 देशी रियासतों का

भारत में विलय था अद्भुत।

उन्हें लौह पुरुष कहा गया

इस कार्य में देखकर सूझबूझ।।

इस तरह अधिकांश रियासतें

भारत के साथ आई।

जूनागढ़, कश्मीर, हैदराबाद का

कठिनता से विलय हो पाई।।

जूनागढ़ की जनता हिन्दू

शासक था मुसलमान।

इसलिये नवाब

जाना चाहा पाकिस्तान।।

नवाब पाकिस्तान भाग गया।

जब जनता का पड़ा दबाव।

जूनागढ़ के विलय में

दिखा सरदार पटेल का प्रभाव।।

कश्मीर के राजा हरिसिंह ने

स्वतंत्र रहने का लिया निर्णय।

जनता ने मांग रखी

भारत में हो रियासत का विलय।।

कश्मीर को साथ लेने

पाकिस्तान का था मन।

घुसपैठियों को आक्रमण करने

दिया सशस्त्र प्रोत्साहन।।

तब राजा हरिसिंह ने

अपने को निःसहाय पाकर।

भारत में विलय के

समझौते पर किया हस्ताक्षर।।

हैदराबाद पर था

पाकिस्तान का प्रभाव।

भारत में विलय होने

जनता ने बनाया दबाव।।

रामानंद तीर्थ के नेतृत्व में

जनता ने किया विरोध।

भयंकर अत्याचार कर

निजाम ने लिया प्रतिशोध।।

अंततः निजाम के विरुध्द

सैनिक कार्यवाही की आई बारी।

रियासत के विलय में

पटेल ने निभाई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी।।

संविधान के प्रारूप बनाने में

भीमराव अंबेडकर का रहा योगदान।

26 नवंबर 1949 को इसे

अंतिम रूप किया गया प्रदान।।

26 जनवरी 1950 से

संविधान अस्तित्व में आया।

इस प्रकार भारत

संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र कहलाया।।

हमारे संविधान ने

उच्च आदर्शों को महत्व दिया।

प्रतिवर्श 26 जनवरी को

गणतंत्र दिवस मनाने का निर्णय लिया।।

लम्बे संघर्ष के बाद

मिला यह उपहार।

शासन चलाया जाता है

इसी संविधान के अनुसार।।